प्रकाशन तिथि : 01/06/2024 वर्ष 76 • अंक 2 • अप्रैल-मई 2024 कुल पेज : 16 • मूल्य : ₹ 2

प्रकाशन समाचार

राजकमल प्रकाशन समूह

राजकमल राधाकृष्ण लोकभारती सार्थक फंडा हंस प्रकाशन पूर्वोदय सारांश साहित्य भवन रेमाधव अक्षर

1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 ❒ **शाखाएँ :** अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800006 ❒ पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज-211001
मुम्बई : 1, अनमोल सोआराबजी संतुक लेन, धोबी तलाव, मरीन लाइन-400002 ❒ फोन : 23274463, 23288769 ❒ व्हाट्सएप्प नम्बर : +91 9311397733 ❒ info@rajkamalprakashan.com

निर्मल को पढ़ने वाला व्यक्ति कभी असहिष्णु नहीं हो सकता

यशस्वी कथाकार निर्मल वर्मा की 96वीं जयंती पर राजकमल प्रकाशन ने किया 'कृती निर्मल' का आयोजन

03 अप्रैल, 2024, नई दिल्ली। प्रख्यात कथाकार निर्मल वर्मा की 96वीं जयंती पर 3 अप्रैल को राजकमल प्रकाशन ने 'कृती निर्मल' का आयोजन किया। इंडिया हैबिटेट सेंटर के गुलमोहर सभागार में शाम 6:30 बजे से आयोजित इस कार्यक्रम में निर्मल वर्मा की अब तक असंकलित कहानियों के संग्रह 'थिगलियाँ' का लोकार्पण किया गया। एक तरह से यह उनका अन्तिम कहानी-संग्रह है। कार्यक्रम पर उनके कथा साहित्य पर बातचीत की गई। उनकी रचनाओं के कुछ चुनिंदा अंशों का पाठ भी किया गया।

प्रख्यात इतिहासकार सुधीर चन्द्र ने किया 'थिगलियाँ' का लोकार्पण

'थिगलियाँ' का लोकार्पण प्रख्यात इतिहासकार सुधीर चन्द्र ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा, मेरे लिए यह बड़ा सुखद है कि मुझे निर्मल वर्मा के कहानी-संग्रह का लोकार्पण करने का सौभाग्य मिल रहा है। मेरी निर्मल से उम्र में फ़र्क़ होने के बावजूद मित्रता थी। वे उन लोगों में थे जहाँ फ़र्क़ नहीं पड़ता कि आप ग्यारह साल छोटे हैं या बड़े। निर्मल वर्मा को मैंने बहुत पढ़ा है। कम भारतीय लेखक हैं जिन्हें मैंने इतना पढ़ा, जितना निर्मल को। उनके कथा लेखन का मैं बेहद प्रशंसक और भक्त हूँ। लेखों में मुझे प्राय: निर्मल से आपत्ति हो जाया करती थी। वह दूसरा ही जमाना था, वे दूसरे ही लोग थे। तब इससे मनमुटाव नहीं होता था कि आपस में घोर असहमति हो सकती है। पूरी संभावना थी कि आप मुक्त कंठ से प्रशंसा करें और आलोचना भी करें। यह दुर्भाग्य की बात है कि अब निर्मल जैसे लोग बहुत कम होते जा रहे हैं।

निर्मल से अपनी मित्रता को याद करते हुए सुधीर चन्द्र ने कहा, इंस्टिट्यूड ऑफ़ एडवांस स्टडीज़, शिमला, में निर्मल और मैं क़रीब डेढ़ साल तक साथ-साथ रहे। वहाँ लगभग रोज़ पर्चे पढ़े जाते थे और उन पर ज़बरदस्त चर्चाएँ होती थीं, देर रात तक बहसें चलती थीं, शेष पृष्ठ 2 पर

'लोहिया के सपनों का भारत' पुस्तक का लोकार्पण

02 अप्रैल, 2024 नई दिल्ली। डॉ. राममनोहर लोहिया एक वैचारिक योद्धा थे। उनका मानना था कि मैं जो सोचता हूँ वह धरातल पर भी उसी रूप में आना चाहिए। उन्होंने अपने समय के हर जरूरी सवाल पर मौलिक ढंग से विचार किया। सामाजिक न्याय और समानता स्थापित करने के लिए उन्होंने जो सिद्धान्त दिए वे आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। लोहिया सबको साथ लेकर चलने और सबको प्रतिनिधित्व देने की वकालत करते थे। वे ऐसे महापुरुष हैं जिनके रास्ते पर चलकर नए भारत की एक लकीर खींची जा सकती है। ये बातें मंगलवार को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में 'लोहिया के सपनों का भारत' पुस्तक के लोकार्पण के दौरान वक्ताओं ने कही। अशोक पंकज द्वारा लिखित इस पुस्तक का प्रकाशन लोकभारती प्रकाशन ने किया है।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राज्यसभा के उप-सभापति हरिवंश रहे और अध्यक्षता गांधीवादी समाजवादी रघु ठाकुर ने की। वहीं, राजनयिक और पूर्व विदेश सचिव मुचुन्द दूबे; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्यक्ष राम बहादुर राय; और सामाजिक विमर्श के सम्पादक और राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व-कुलपति प्रो. के. एल. शर्मा बतौर वक्ता उपस्थित रहे।

लोहिया जी के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने की ज़रूरत

अपने वक्तव्य के दौरान पुस्तक के लेखक अशोक पंकज ने कहा, "लोहिया जी ने अपने सिद्धान्तों में भारतीय सन्दर्भ में बदलाव के कई ऐसे सूत्र बताए थे जिनका अगर आज़ादी के बाद से ही पालन किया गया होता तो देश में आज गरीबी जैसी समस्याएँ नहीं होतीं। लोहिया जी और समाजवाद के नाम पर आज के समय चुनावों में वोट बटोरने वाली पार्टियों ने भी उनके विचारों को सही तरीक़े से नहीं समझा है और न ही उन्हें जनता तक पहुँचाया है।"

'लोहिया के सपनों का भारत' पुस्तक लिखने का विचार कैसे आया इस पर बात करते हुए उन्होंने कहा, "जब मैंने लोहिया जी के विचारों को पहली बार पढ़ा तो मुझे लगा कि सामाजिक न्याय और समानता स्थापित करने के बारे में उनके सिद्धान्तों को हमने अभी तक शेष पृष्ठ 2 पर

(पृष्ठ 1 का शेष) निर्मल वर्मा

हम लगातार मिलते-जुलते थे। उन्होंने कहा, निर्मल वर्मा और गगन गिल पटपड़गंज के जिस अपार्टमेंट में रहते थे, उनके ऊपर के फ्लोर पर मैं और गीतांजलि श्री रहते थे। उस समय शायद ही ऐसी कोई शाम होती थी जब हम चारों साथ न बैठे हों।

निर्मल ने न कभी झूठ लिखा न कभी झूठ जिया

लोकार्पण के बाद 'आलोचना' पत्रिका के सम्पादक संजीव कुमार और कथाकार वन्दना राग ने 'थिगलियाँ' से कुछ अंशों का पाठ किया और गगन गिल से निर्मल के कथा-साहित्य पर बातचीत की। बातचीत के दौरान निर्मल वर्मा के साथ अपने जुड़ाव के शुरुआती दिनों को याद करते हुए गगन गिल ने कहा, निर्मल की कहानियों में बच्चे क्या करते हैं, बच्चे किस तरह से बड़ों की दुनिया को देखते हैं यह बात मुझे बहुत परेशान करती थी और आकर्षित भी करती थी। हमारी मित्रता के दौरान वे मुझे अक़्लमंद बने रहने का पूरा मौक़ा देते थे। शादी के बाद भी ऐसा रहा।

निर्मल वर्मा के लेखन और विचारों के पाठकों पर प्रभाव के बारे में संजीव कुमार के एक सवाल पर गगन गिल ने कहा कि कोई भी साहित्य आपको कभी असहिष्णु नहीं बनाता। उन्होंने कहा, साहित्य हमें बदलता है, संवेदनशील बनाता है, यह अर्धसत्य है। हम कोई किताब पढ़ते हैं तो उसके असर में कुछ देर के लिए बदल जाते हैं लेकिन स्थायी रूप से हम तभी बदलते हैं जब हम अपने आईने के सामने अपने से प्रश्न करते हैं। किताब पढ़कर कौन बदलता है? थोड़ा-सा मुग़ालता ज़रूर होता है उस वक़्त, शरतचंद्र को पढ़ते हैं तो हमें लगता है कि थोड़े बदल गए हैं, टैगोर से बदल गए हैं, टॉलस्टॉय से बदल गए हैं, लेकिन ऐसे नहीं बदलते। जो व्यक्ति निर्मल को पढ़ता है, वह या तो खुले दिमाग़ का होगा या उनको पढ़ते-पढ़ते हो जाएगा। संजीव कुमार ने दरअसल कहा था कि उन्हें लगता है कि निर्मल वर्मा को पढ़ने वाला कोई व्यक्ति असहिष्णु नहीं हो सकता। इस पर गगन गिल ने कहा, मैं न तो अपने आप को निर्मल की रिप्रेज़ेंटेटिव मानती हूँ, न अपोलॉजिस्ट। आई एम जस्ट अ वाइफ़। और पत्नी के बतौर मैं यह कह सकती हूँ कि मेरी मुश्किल साधारण पाठकों से अलग तरह की है, वह इस तरह से कि आपको निर्मल के असर में जाना अच्छा लगता है और मुझे निर्मल के असर से बाहर निकलने की चुनौती रहती है। गगन गिल ने निर्मल के लेखकीय व्यक्तित्व का उल्लेख करते हुए कहा कि उनमें ख़ुद को ख़ारिज होते सुनने की आदत थी, लेकिन वे कभी झूठ बर्दाश्त नहीं करते थे। ऐसा खरा आदमी मैंने दूसरा नहीं देखा। उन्होंने न कभी झूठ लिखा न कभी झूठ जिया। उन्होंने कहा, निर्मल को कई बार लोग उनके किसी एक बयान के आधार पर इतनी आसानी से किसी एक धड़े से जुड़ा हुआ करार देते हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि किसी भी राजनीतिक सत्ता के साथ उनका रिश्ता कभी सहज नहीं रहा। गम्भीर लेखक की सही समझ और परख समय की माँग करती है। बातचीत के दौरान कथाकार वन्दना राग ने निर्मल वर्मा को बहुत कोमल संवेदनाओं वाला लेखक बताया। वन्दना राग ने कहा, ज़ाहिर-सी बात है कि जो भी निर्मल को पढ़ेगा उसके अन्दर वैसी ही संवेदना विकसित होगी। लम्बे समय में दूसरी चीज़ों में पड़कर साहित्य का असर हम पर कम हो जाता है लेकिन फ़ौरी तौर पर तो जो निर्मल का पाठक होगा वह उसे उसी सुन्दर दुनिया में ले जाएगा जहाँ प्रेम की उत्कृष्ट भावना है।

राजकमल से निर्मल साहित्य का पुनर्प्रकाशन ख़ुशी की बात

इससे पहले, कार्यक्रम के आरम्भ में 'कृती निर्मल' में उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए राजकमल प्रकाशन के प्रबंध निदेशक अशोक महेश्वरी ने कहा, हमारे लिए यह बहुत ख़ुशी का समय है। हम निर्मल वर्मा और गगन गिल की सभी पुस्तकों का प्रकाशन कर रहे हैं। निर्मल और राजकमल का अलगाव साहित्यिक समाज ने कभी स्वीकार नहीं किया। किताबों के इस पुनर्प्रकाशन का सभी ने मुक्तभाव से स्वागत किया है। पुस्तकों की प्रस्तुति को भी सभी ने सराहा है। 'थिगलियाँ' का ज़िक्र करते हुए अशोक महेश्वरी ने कहा कि गगन गिल द्वारा सम्पादित इस पुस्तक की भूमिका और इसमें संकलित कहानियों पर गगन जी की टिप्पणियों ने इस संग्रह की रचनाओं की एक पृष्ठभूमि पाठकों के सामने रख दी है। किसी भी लेखक और उसकी रचनाओं के बारे में इतना आत्मीय मंथन वही कर सकता है, जिसने ख़ुद इन्हें जिया हो। मैं आशा करता हूँ कि हिन्दी का निर्मल प्रेमी पाठक समाज इस पुस्तक का पुरज़ोर स्वागत करेगा।

(पृष्ठ 1 का शेष) लोहिया के सपनों का भारत

सही तरीक़े से समझा नहीं है। उन्होंने जो सिद्धान्त दिए थे वे आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। उनके विचारों को हमें जन-जन तक पहुँचाने की ज़रूरत है। यहीं से मुझे इस पुस्तक को लिखने का विचार आया। मैंने कोशिश की है कि समाजवाद के बारे में लोहिया जी के जो विचार थे उनको सार रूप में इस पुस्तक में रखूँ ताकि अगर कोई उनके समाजवाद को समझना चाहे तो उसे इसका सार मिल सके।"

सबको साथ लेकर चलने की वकालत करते थे लोहिया

कार्यक्रम के पहले वक्ता मुचकुन्द दूबे ने देश की आज़ादी के लिए राममनोहर लोहिया द्वारा किए गए योगदान को उद्धृत करते हुए कहा, "हम देश की आबादी के एक बड़े हिस्से को जिसमें महिलाएँ, दलित और अल्पसंख्यक शामिल हैं, उनको बाहर रखकर कभी सम्पन्नता की कल्पना भी नहीं कर सकते। लोहिया सबको साथ लेकर चलने और सबको प्रतिनिधित्व देने की वकालत करते थे।"

एक सच्चे आन्दोलनजीवी थे लोहिया

अगले वक्ता राम बहादुर राय ने कहा, "डॉ. लोहिया एक सच्चे आन्दोलनजीवी थे। अगर उनको पता चलता कि कोई समूह अपनी माँगों को लेकर आवाज़ उठा रहा है तो वह ज़रूर उनका साथ देते थे। डॉ. लोहिया एक ऐसे महापुरुष हैं जिनके रास्ते पर चलकर नए भारत की एक लकीर खींची जा सकती है।"

एक वैचारिक योद्धा थे लोहिया

अगले वक्ता प्रो. के. एल. शर्मा ने कहा, "डॉ. लोहिया एक वैचारिक योद्धा थे। वे वास्तविक सामाजिक संरचना के पक्षधर थे। उनका मानना था कि मैं जो सोचता हूँ वह धरातल पर भी उसी रूप में आना चाहिए। लोगों में जागरूकता लाने के लिए उन्होंने कई बड़े आन्दोलनों का नेतृत्व किया। मानववाद पर उन्होंने बहुत ज़ोर दिया। उनका मानना था कि आखिरी व्यक्ति तक लाभ पहुँचना चाहिए। वे कहते थे कि ग़ैर-बराबरी के कई सोपान है, हमारे लिए उनको समझना बहुत ज़रूरी है। न्याय के सिद्धान्त से ही जाति की व्यवस्था पर प्रहार किया जा सकता है।"

लोहिया ने हर ज़रूरी सवाल पर मौलिक ढंग से विचार किया

अगले वक्ता हरिवंश ने राममनोहर लोहिया के बारे में एक क़िस्सा सुनाते हुए अपने वक्तव्य की शुरुआत की। उन्होंने कहा, "लोहिया जी जब विदेश से पढ़ाई करके लौटे तो उनके घरवालों ने उनसे कोई नौकरी या व्यापार करने के लिए कहा तो उन्होंने नौकरी करने से इनकार कर दिया। जब उनके चाचा ने उनसे पूछा कि तुम किस चीज़ का व्यापार करोगे तो उनका जवाब था—करोड़पतियों के नाश का व्यापार। राममनोहर लोहिया की लोकप्रियता के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा, "दूर-दराज के गाँवों में बैठे लोगों तक भी उनकी आवाज़ पहुँचती थी क्योंकि वह बहुत सादगी से उन्हीं की भाषा में अपनी बात रखते थे। उनका पहनावा भी देश के आम लोगों की तरह था। उन्होंने समाज के अन्तिम व्यक्ति को यह अहसास कराया कि वे उनसे अलग नहीं हैं, बल्कि उन्हीं के बीच के व्यक्ति हैं।" लोहिया के विचारों की प्रासंगिकता पर बात करते हुए उन्होंने कहा, "लोहिया जी ने अपने समय के हर ज़रूरी सवाल पर मौलिक ढंग से विचार किया है। उनके विचारों को कैसे आगे बढ़ाया जाए इस पर हमें सोचना चाहिए।"

असहमति लोकतंत्र का तत्त्व है

कार्यक्रम के अन्तिम वक्ता रघु ठाकुर ने कहा, "लोहिया की चिन्ताएँ वाजिब थीं। लेकिन आज के परिप्रेक्ष्य में देखें तो चीज़ें काफ़ी बदल गई हैं। अगर आज लोहिया होते और उनसे पूछा जाता कि आपके समाजवाद को अनुयायियों ने जिस तरह से आगे बढ़ाया क्या आप उससे संतुष्ट हैं तो इसको लेकर शायद वे भी नाराज़गी ज़ाहिर करते। उनका कहना था कि कथनी और करनी में अन्तर होता है। उनकी विचारधारा को मानने वाले लोगों ने भी शायद यही किया जिसकी वजह से समाजवाद का वह आन्दोलन उस रूप में आगे नहीं चल पाया।" आगे उन्होंने कहा, "लोहिया जी को असहमति की आवाज़ के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। असहमति लोकतंत्र का तत्त्व है। अगर लोकतंत्र को बचाना है तो हमें कुछ असहमति की आवाज़ उठाने और अपनी बातें कहने के लिए खड़े होना होगा। आज के समय में लोहिया जी के विचारों से हमें सीखने और उन्हें व्यवहार में लाने की ज़्यादा ज़रूरत है। ऐसे में इस पुस्तक के लिए भी यह बहुत उपयुक्त समय है।"

ईश्वर और बाज़ार व **प्रेम में पेड़ होना** कविता संग्रहों की रचयिता व स्वतंत्र पत्रकार **जसिंता केरकेट्टा** को मिलेगा **ओमेगा रिज़िलिएंस अवार्ड**

आठवाँ नन्द चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान समारोह

उदयपुर में नन्द चतुर्वेदी फ़ाउंडेशन की ओर से आयोजित आठवें नन्द चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान समारोह में राजकमल से शीघ्र प्रकाशित **नन्द चतुर्वेदी रचनावली** के आवरण पृष्ठ का लोकार्पण हुआ।

उदयपुर। नन्द चतुर्वेदी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य पर नन्द चतुर्वेदी फ़ाउंडेशन की ओर से आठवाँ नन्द चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ अतिथियों को पुष्पगुच्छ भेंट कर किया गया। अतिथियों के स्वागत हेतु अनुराग चतुर्वेदी ने स्वागत उद्बोधन दिया, साथ ही अतिथियों का परिचय देते हुए अशोक वाजपेयी की दो प्रसिद्ध कविताओं से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। आपने कहा कि अशोक जी निर्भीक कवि हैं जिनकी निष्पक्षता उल्लेखनीय है। आपने कहा कि नन्द जी को भी ओम थानवी पसन्द थे, ओम थानवी जी को वे अपनी पहली कविता भेजते थे, आपने कहा कि माधव हाड़ा चमकते सितारे हैं। वे प्रख्यात आलोचक हैं। पल्लव हिन्दू कॉलेज में प्रोफ़ेसर हैं और ये इनका जादुई चमत्कार है कि दिल्ली जाकर आपने अपना स्थान बनाया है।

इस अवसर पर रचनावली के आवरण का विमोचन किया गया। रचनावली के संपादक आलोचक पल्लव ने नन्द बाबू की कविता के अंश सुनाते हुए कहा कि नन्द बाबू ने हमारे लिए समृद्ध विरासत छोड़ी है। उन्होंने कहा कि नन्द बाबू में पिछली पीढ़ी को याद करने और आदर देने का गहरा जज़्बा था। जिन्हें सब भूल जाते हैं। नन्द बाबू उन्हें कविता में स्थान देते हैं। चार खंडों की रचनावली का परिचय देते हुए उन्होंने बताया कि पहले खंड में कविता, दूसरे खंड में वैचारिक गद्य, तीसरे खंड में नन्द बाबू के संस्मरण एवं चौथे खंड में अनुवाद होंगे।

मुख्य वक्ता अशोक वाजपेयी ने 'कविता का समय और समाज' विषय पर स्मृति व्याख्यान दिया। आपने कहा कि नन्द सादगी पसंद और पारदर्शी व्यक्तित्व वाले थे। नन्द बाबू प्रियदर्शी, स्वप्नदर्शी व समयदर्शी थे। उन्होंने कठिन से कठिन समय में सपने देखने की ताब रखी। कवि होने का प्रतिमान है कि उसमें जिजीविषा भी हो। नन्द बाबू में ये है, उनकी सामाजिकता भी सौम्य थी, यह उनकी कविताओं में स्वयं नन्द बाबू ने कहा है। प्रसिद्ध आलोचक प्रो. माधव हाड़ा ने कहा कि कविता का समय से सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण है नन्द बाबू की कविता में समय पारदर्शी है। आपने नन्द बाबू की कविता का पाठ करते हुए कहा कि नन्द बाबू की कविता जीवन के राग की कविता है।

अध्यक्षता कर रहे ओम थानवी ने कहा कि मुझ पर नन्द बाबू का स्नेह काफ़ी था। नन्द बाबू मुझे चिट्ठियाँ लिखते थे जिन्हें मैंने सँभाल रखा है, उनमें से कुछ चिट्ठियों का वाचन कर कहा कि वे समय के यथार्थ की बातें कहते थे। कार्यक्रम का संचालन प्रो. अरुण चतुर्वेदी ने किया। साथ ही कार्यक्रम में उपस्थित सभी श्रोताओं और वक्ताओं का अपनी और फ़ाउंडेशन की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया। **— सुयश चतुर्वेदी, नन्द चतुर्वेदी फ़ाउंडेशन, उदयपुर**

नये संस्करण : अप्रैल, 2024

डार से बिछुड़ी (उपन्यास)

— कृष्णा सोबती

कृष्णा सोबती ने अपनी इस कथाकृति में जिस लाड़ से पाशो-जैसे चरित्र की रचना की है, और जिस तरह स्त्री-जीवन के समक्ष जन्म से ही मौजूद ख़तरों और उसकी विडम्बनाओं को रेखांकित किया है, आकस्मिक नहीं कि उसका एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य भी है; और वह है सिक्ख और अंग्रेज़ सेनाओं के बीच 1849 में हुआ अन्तिम घमासान! पाशो उसमें शामिल नहीं थी, लेकिन वह उसकी ज़िन्दगी में अनिवार्य रूप से शामिल था।

₹ 495 HB 9788126702992

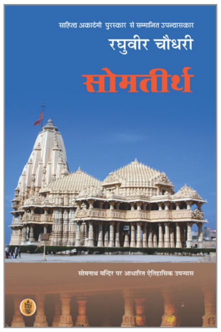

सोमतीर्थ (उपन्यास)

— रघुवीर चौधरी

महमूद ग़ज़नवी ने सोमनाथ लूटा, उसके बाद भारत के हिन्दुओं में मुस्लिमों के प्रति अरुचि जागी, जो और दृढ़ होती गई। ऐसा होना नहीं चाहिए था। महमूद के दो मुख्य सेनापति हिन्दू थे और महमूद धर्म के अगुआ के रूप में नहीं आया था। उसकी भूख सत्ता और सम्पत्ति की थी। इस उपन्यास में तत्कालीन राजनीतिक–सामाजिक स्थितियों का वर्णन करते हुए उपन्यासकार ने लोगों के निजी सुख–दु:ख तथा दाँव–पेच को भी संजीदगी से उजागर किया है।

₹ 399 PB 9788183616867 | ₹ 895 HB 9788171198757

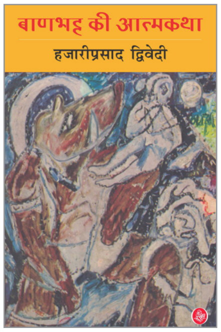

बाणभट्ट की आत्मकथा (उपन्यास)

— हजारीप्रसाद द्विवेदी

इस उपन्यास में द्विवेदी जी ने प्राचीन कवि बाण के बिखरे जीवन-सूत्रों को बड़ी कलात्मकता से गूँथकर एक ऐसी कथाभूमि निर्मित की है जो जीवन-सत्यों से रसमय साक्षात्कार कराती है। इसमें वह वाणी मुखरित है जो सामगान के समान पवित्र और अर्थपूर्ण है— 'सत्य के लिए किसी से न डरना, गुरु से भी नहीं, मंत्र से भी नहीं; लोक से भी नहीं, वेद से भी नहीं।' बाणभट्ट की आत्मकथा का कथानायक कोरा भावुक कवि नहीं वरन कर्मनिरत और संघर्षशील जीवन-योद्धा है।

₹ 399 PB 9788126717378

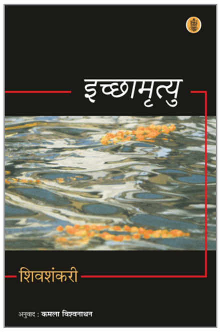

इच्छामृत्यु (उपन्यास)

— शिवशंकरी

किसी दुर्घटना या रोग-जर्जर अवस्था के कारण कोई व्यक्ति अगर स्वस्थ या फिर जीवित रहने की तमाम संभावनाओं से परे चला जाए तो क्या इच्छामृत्यु ही उसका एकमात्र उपचार है? क्या उसे उसकी असह्य-असाध्य पीड़ा अथवा दयनीयता से बचाने का यही अकेला रास्ता है? सुपरिचित तमिल लेखिका शिवशंकरी का यह उपन्यास इसी समस्या से रू-ब-रू कराता है। कथाकेन्द्र में हैं जननी और सत्या। दोनों ही शिक्षित और सुसंस्कृत पति-पत्नी हैं। जननी नर्तकी है और सत्या एक पत्रिका का संपादक।

₹ 395 HB 9788171196708

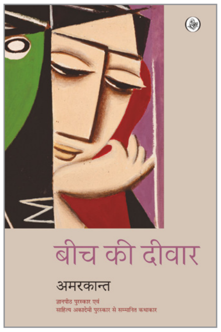

बीच की दीवार (उपन्यास)

— अमरकान्त

यह उपन्यास मध्यवर्ग की बदलती हुई परिस्थितियों एवं मन:स्थितियों का विश्लेषण करनेवाली एक विशेष कृति है। इस उपन्यास के केन्द्र में एक ऐसी नारी है, जो आज की अवसरवादी ज़िन्दगी के भँवर-जाल में फँसकर संघर्ष करती है, आगे बढ़ती है और विकास की वांछित मंज़िल प्राप्त करने में सफल होती है। पूरा उपन्यास जहाँ हमें आनन्दित करता है, वहीं सामाजिक बदलाव के लिए आस्था व विश्वास भी प्रदान करता है।

₹ 495 HB 9788126716302

गोकुल मथुरा द्वारिका (उपन्यास)

— रघुवीर चौधरी

अपने-अपने में परिपूर्ण मगर एक दूसरे की सर्वथा पूरक यह उपन्यास-त्रयी हिन्दी पाठकों को उस श्रीकृष्ण से परिचित करवाने का प्रयास है जो रसेश्वर से योगेश्वर बने हैं। एक से बढ़कर एक चुनौतियों का सामना करनेवाला यह चरित्र प्रत्येक युग के लिए प्रेरणादायक है। 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार' विजेता रघुवीर चौधरी की यह उपन्यास-त्रयी इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि इसमें मिथक की गरिमा और कथात्मकता की रक्षा करते हुए आधुनिक जीवन और परिवेश की झलक भी पाठकों को स्पष्ट रूप में मिल जाती है।

₹ 395 HB 9788171196708

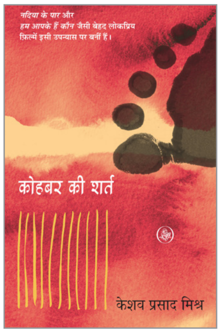

कोहबर की शर्त (उपन्यास)

— केशव प्रसाद मिश्र

इस उपन्यास में पूर्वी उत्तर प्रदेश के दो गाँवों—बलिहार और चौबे छपरा—का जनजीवन गहन संवेदना और आत्मीयता के साथ चित्रित हुआ है—एक रेखांकन की तरह, यथार्थ की आड़ी-तिरछी रेखाओं के बीच झाँकती-सी कोई छवि या आकृति। यह आकृति एक स्वप्न है। इसे दो युवा हृदयों ने सिरजा था। यह उपन्यास हिन्दी सिनेमा की दो चर्चित फ़िल्मों का आधार बना है : 1982 में हिरेन नाग द्वारा निर्देशित 'नदिया के पार' तथा हाल के वर्षों में बेहद लोकप्रिय रही 'हम आपके हैं कौन।'

₹ 199 PB 9788126714223

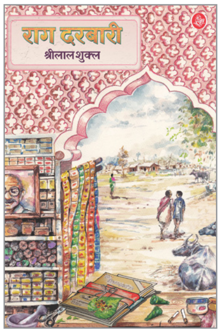

राग दरबारी (उपन्यास)

— श्रीलाल शुक्ल

यह एक ऐसा उपन्यास है जो गाँव की कथा के माध्यम से आधुनिक भारतीय जीवन की मूल्यहीनता को सहजता और निर्ममता से अनावृत्त करता है। शुरू से आख़िर तक इतने निस्संग और सोद्देश्य व्यंग्य के साथ लिखा गया हिन्दी का शायद यह पहला बृहत् उपन्यास है। 1971 में इसे 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया और 1986 में एक दूरदर्शन-धारावाहिक के रूप में इसे लाखों दर्शकों की सराहना प्राप्त हुई। वस्तुत: 'राग दरबारी' हिन्दी के कुछ कालजयी उपन्यासों में से एक है।

₹ 399 PB 9788126713967

नये संस्करण : अप्रैल, 2024

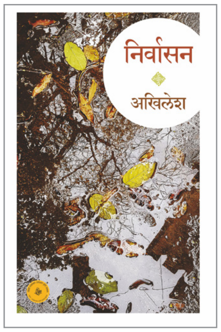

निर्वासन (उपन्यास)

— अखिलेश

अखिलेश का यह बहुपठित और बहुचर्चित उपन्यास जो पिछले दस वर्षों के अन्तराल में लगभग एक क्लासिक का दर्जा हासिल कर चुका है, हमारे समय की एक बड़ी विडम्बना निर्वासन और विस्थापन का बहुस्तरीय आख्यान है। वह निर्वासन जो भीतर भी घटित हो रहा है, और बाहर भी। इसके साथ यह भारतीय समाज में नए और पुराने की समानान्तर मौजूदगी और उससे भी आगे बढ़कर उनके गठजोड़ के विरोधाभासी अतियथार्थ की कथा भी कहता है।

₹ 995 HB 9788126726356

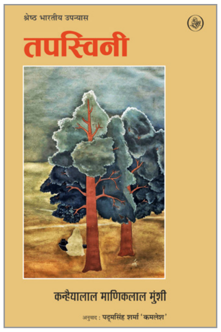

तपस्विनी (उपन्यास)

— कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी

यह एक ऐसी अमर रचना है जिसमें 1857 से लेकर 1947 तक का कालखंड समाहित है। भारतीय स्वतंत्रता के स्वर्ण जयंती वर्ष में इस कृति का इसलिए भी अधिक महत्त्व है कि इसमें स्वतंत्रतापूर्व की राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ समाहित हैं। इतिहासबद्ध न होने पर भी इस कृति के ऐतिहासिक महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। स्वतंत्रतापूर्व और स्वतंत्रता-पश्चात् की स्थितियों के तुलनात्मक अध्ययन में यह कृति महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

₹ 1795 PB 9788126700721

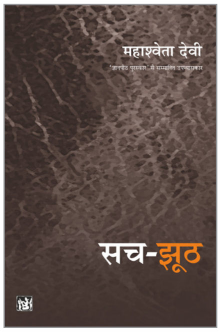

सच-झूठ (उपन्यास)

— महाश्वेता देवी

भारत में नव-धनाढ्य वर्ग की अपनी विचित्र लीला है। अब वे घर-मकान छोड़ प्रोमोटरों द्वारा निर्मित बहुमंज़िली इमारतों के फ़्लैटों में कई-कई मंज़िलों में बसते हैं। लेकिन इन बहुमंज़िली इमारतों के पार्श्व में एक पुरानी बस्ती का होना भी आवश्यक है। वह बस्ती न रहे तो फ़्लैटों में बसनेवाली मेमसाहबों की सेवा के लिए दाइयाँ-नौकरानियाँ कहाँ से आएँ। ऐसी ही एक दाई और धनिक साहब अर्जुन के चारों ओर घूमती यह कथा धनिक वर्ग के जीवन के गुप्त रहस्यों को प्रकट करती है जहाँ ग़रीबों का शोषण आज भी बरक़रार है।

₹ 199 PB 9788180317897 | ₹ 495 HB 9788180317880

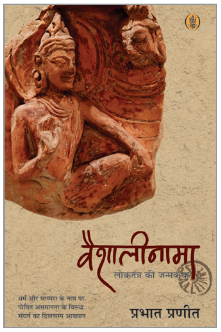

वैशालीनामा (उपन्यास)

— प्रभात प्रणीत

यह उपन्यास सुदूर अतीत की पृष्ठभूमि में ऐसी एक कथा प्रस्तुत करता है जो न केवल रोचक है बल्कि जिसमें निहित मूल्यबोध तत्कालीन देशकाल में जितना युग-परिवर्तक हो सकता था, उससे कम परिवर्तनकारी और प्रासंगिक वह आज भी नहीं है। वह मूल्यबोध है मनुष्यमात्र की समानता का। यह समानता ऐसी किसी व्यवस्था में सम्भव नहीं हो सकती जिसका आधार स्वयं असमानता पर टिका हो। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था ही यह सम्भव कर सकती है।

₹ 299 PB 9788119092796

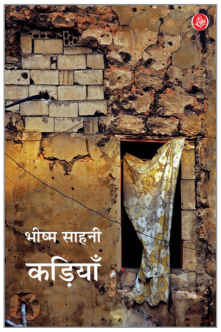

कड़ियाँ (उपन्यास)

— भीष्म साहनी

'कड़ियाँ' भीष्म साहनी का महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इसकी विषयवस्तु एक ऐसे मध्यवर्गीय परिवार से सम्बन्ध रखती है जो परम्परागत संस्कारों में जकड़ा हुआ है, लेकिन इसका मुख्य कथानक दाम्पत्य जीवन की कड़वाहट और स्त्री की असहाय स्थिति से सम्बन्धित है। एक तरफ़ रूढ़ नैतिक मान्यताएँ हैं जो पति-पत्नी के सम्बन्धों में दरार पैदा कर देती हैं और दूसरी तरफ़ पत्नी की आर्थिक परनिर्भरता है जिसके कारण उसे अनेक मानसिक यंत्रणाओं से गुज़रना पड़ता है।

₹ 695 HB 9788126714759

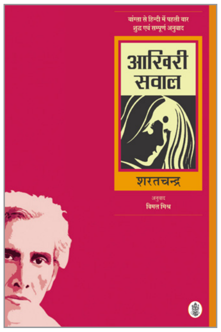

आखिरी सवाल (उपन्यास)

— शरतचन्द्र

इस उपन्यास में शरतचन्द्र ने स्त्री–पुरुष के मन को लेकर जो आख़िरी सवाल, मुख्यत: मनोरमा और अजित तथा कमल और अविनाश के सम्बन्धों के माध्यम से उठाया है, उसका जवाब आज तक किसी ने नहीं दिया है। स्त्री–पुरुष के मन को लेकर समाज में बार–बार यह सवाल उठाया जाता है कि क्या नैतिक है और क्या अनैतिक? यही तो आखिरी सवाल है। पाठक अपने मन के अनुसार आख़िरी सवाल का जवाब इस उपन्यास में पा जाएँगे।

₹ 395 HB 9788171196708

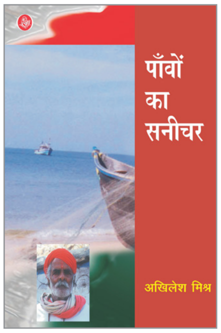

पाँवों का सनीचर (उपन्यास)

— अखिलेश मिश्र

इस उपन्यास में आज़ादी से पूर्व के उत्तर भारत के ग्रामीण परिवेश के सौहार्दपूर्ण सामाजिक जीवन का जीवन्त चित्रण हुआ है। बटोहियों की बतकही के अद्भुत कथारस से आप्लावित यह आख्यान ग्रामीण जीवन के कई अनछुए पहलुओं से साक्षात्कार कराता है। इसमें तत्कालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति-नियति का जिस संवेदनापूर्ण ढंग से चित्रण हुआ है और उस स्थिति के ख़िलाफ़ लेखकीय व्यंग्य की त्वरा जिस रूप में उभरकर सामने आई है, वह भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

₹ 695 HB 9788126711635

भारतीपुर (उपन्यास)

— यू. आर. अनन्तमूर्ति

यह एक दक्षिण भारतीय बस्ती की कहानी है, लेकिन बस्ती तो एक बहाना है। दरअसल यह समसामयिक भारतीय जीवन के दहशत पैदा करनेवाले अनुभवों और तिलमिला देनेवाले यथार्थ का बहुत तीखा और एक हद तक अविश्वसनीय लगनेवाला दस्तावेज़ है। गहरी संवेदना, मार्मिक भाषा, भेदक सामाजिक दृष्टि और साहसिक रचनाशीलता के लिए विख्यात अनन्तमूर्ति का यह उपन्यास भी हिन्दी पाठकों के लिए एक नया अनुभव देता है—'संस्कार' की ही तरह।

₹ 299 PB 9788183614665

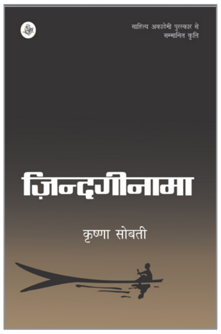

ज़िन्दगीनामा (उपन्यास)

— कृष्णा सोबती

लेखन को जीवन का पर्याय माननेवाली कृष्णा सोबती की क़लम से उतरा एक ऐसा उपन्यास जो सचमुच 'ज़िन्दगी' का पर्याय है—'ज़िन्दगीनामा'। 'ज़िन्दगीनामा' का कथानक खेतों की तरह फैला, सीधा-सादा और धरती से जुड़ा हुआ। 'ज़िन्दगीनामा' की मजलिसें भारतीय गाँव की उस जीवन्त परम्परा में हैं जहाँ भारतीय मानस का जीवन-दर्शन अपनी समग्रता में जीता चला जाता है। 'ज़िन्दगीनामा' के पन्नों में आपको बादशाह और फ़क़ीर, शहंशाह, दरवेश और किसान एक साथ खेतों की मुँड़ेरों पर खड़े मिलेंगे।

₹ 1195 HB 9788126707805

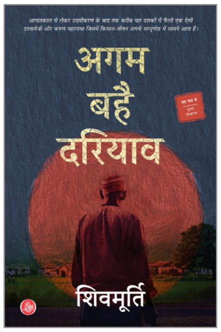

अगम बहै दरियाव (उपन्यास)

— शिवमूर्ति

कल्याणी नदी के कंठ पर बसे बनकट गाँव की इस कथा में समूचे उत्तर भारत के किसानों और मजदूरों की व्यथा समोयी हुई है। इस दुनिया में सब शामिल हैं—अगड़े, पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यक सब। और सब इसमें बराबर के हिस्सेदार हैं। कथा-साहित्य में लम्बे समय से अनुपस्थित किसान को यह उपन्यास वापस एक त्रासदी-नायक के रूप में केन्द्र में लाता है। देश के नीति-नियंता चाहें तो इस आख्यान को एक 'ग्राउंड रिपोर्ट' की तरह भी पढ़ सकते हैं।

₹ 599 PB 9789395737975

शेष कादम्बरी (उपन्यास)

— अलका सरावगी

'सोशल वर्क' और 'सोशल जस्टिस' इन दो शब्दों के बीच के स्पेस का मोहक किन्तु मार्मिक प्रतिबिम्बन है अलका सरावगी का उपन्यास—'शेष कादम्बरी'। वृद्ध और युवा जीवन-दृष्टि के फ़र्क़ को रेखांकित करनेवाला यह उपन्यास अलका सरावगी के जीवन्त लेखन का ऐसा प्रतीक है जिसमें उन्नीसवीं सदी में जन्मे, रूबी दी के मामा देवीदत्त का व्यक्तित्व रूबी दी के लिए 'आइडेंटिटी क्राइसिस' का कारक बनकर उभरता है। आधुनिक जीवन के पेचोखम का रूपायन इस उपन्यास को अविस्मरणीय बनाता है।

₹ 299 PB 9788126708574

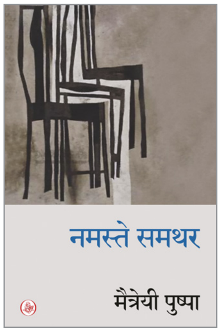

नमस्ते समथर (उपन्यास)

— मैत्रेयी पुष्पा

मैत्रेयी पुष्पा का यह उपन्यास साहित्य और संस्कृति की दुनिया के उन कोनों से परदा उठाता है, जहाँ शब्दों की बाज़ीगरी अपने निकृष्टतम रूप में दिखाई देती है, और जहाँ एक उत्साहसम्पन्न, विज़नरी स्त्री उस यथार्थ से हार-हार कर लड़ती जाती है, जिस यथार्थ को न्याय के पैरोकारों ने अपनी छिछली स्वार्थपरता से गढ़ा है। सुगढ़ भाषा और सान्द्र स्त्री अनुभव से रचा यह उपन्यास हमारे समय के साहित्यिक समाज, राजनीतिक दिग्भ्रम और मर्दाना वर्चस्व से हर जगह लड़ती औरत की समग्र कथा है।

₹ 250 PB 9789390971558

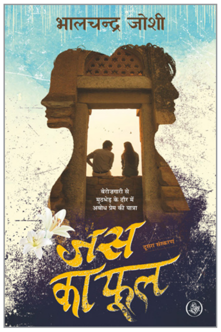

जस का फूल (उपन्यास)

— भालचन्द्र जोशी

यह उपन्यास एक हिन्दू लड़के और मुस्लिम लड़की की प्रेम कहानी है, जिसकी छोटे शहर से चलकर बड़े शहर तक की यात्रा रोमांच, रोमांस और इनके बीच जीवन-यथार्थ के अच्छे-बुरे और कड़वे-मीठे अनुभवों से गुज़रती है। इस उपन्यास में व्यंग्य की एक समानान्तर धारा पात्रों की 'मौलिक धज' को प्रकट करने के कारण ज़रूरी थी, लेकिन वह सहज ही रोचक भी लगेगी। यह उपन्यास प्रेम, अलगाव और नायक की ज़िन्दगी में आए अनचाहे सेक्स अनुभवों को भी रोचक भाषा के साथ प्रस्तुत करता है।

₹ 299 PB 9789387462687

महापथ (उपन्यास)

— सुधाकर अदीब

आदि शंकराचार्य अपने युग की महानतम विभूति थे। यह उपन्यास 'महापथ' उन्हीं के असाधारण, अद्वितीय चरित्र और कृतित्व पर आधारित है। शंकराचार्य के बारे में यह प्रसिद्ध है कि मात्र आठ वर्ष की आयु में उन्होंने चारों वेदों का अध्ययन कर लिया। बारह वर्ष तक सर्व शास्त्रवेत्ता बन गए। उनके अनेक अनुयायी उन्हें शिव का अवतार भी मानते हैं। यह उपन्यास तथ्यों के साथ रेखांकित करता है कि शंकराचार्य के सबसे प्रबल विरोधी प्राय: बौद्ध थे जो वैदिक धर्म के समस्त रूपों का विरोध करते थे।

₹ 499 PB 9789390625819

पतन (उपन्यास)

— भगवतीचरण वर्मा

'पतन' वर्मा जी का प्रथम उपन्यास है जिसकी रचना उन्होंने अपने कालेज के दिनों में की थी। भगवतीचरण वर्मा हिन्दी जगत के जाने-माने विख्यात उपन्यासकार हैं। हास्य, व्यंग्य, समाज, मनोविज्ञान और दर्शन सभी विषयों पर उपन्यास लिखे हैं। कवि और कथाकार होने के कारण वर्मा जी के उपन्यासों में भावनात्मक और बौद्धिकता का सामंजस्य मिलता है। वर्मा जी के उपन्यासों को पढ़ते समय यह सदा ध्यान रखना चाहिए कि उनके कथा साहित्य में कविता की भावना की प्रधानता बौद्धिक यथार्थ से कभी अलग नहीं होती।

₹ 299 PB 9789387462687

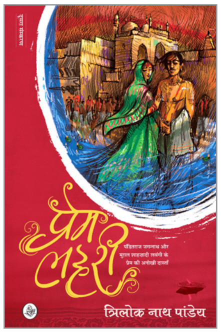

प्रेम लहरी (उपन्यास)

— त्रिलोक नाथ पांडेय

'प्रेमलहरी' इतिहास के बड़े चौखटे में कल्पना और जनश्रुतियों के धागों से बुनी हुई प्रेमकथा है। यह इतिहास नहीं है, न ही इसका वर्णन किसी इतिहास पुस्तक में मिलता है। लेकिन जनश्रुति में इस कथा के अलग-अलग हिस्से या अलग-अलग संस्करण अकसर सुने जाते हैं। इस प्रेम-आख्यान के नायक-नायिका हैं शाहजहाँ के राजकवि और दारा शिकोह के गुरु पंडितराज जगन्नाथ और मुग़ल शाहज़ादी गौहरआरा उर्फ़ लवंगी।

₹ 250 PB 9789387462618

नये संस्करण : अप्रैल, 2024

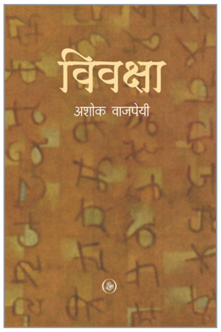

विवक्षा (कविता)

— अशोक वाजपेयी

अपने बारह कविता-संग्रहों में से लगभग दो सौ कविताएँ इस संचयन के लिए स्वयं अशोक वाजपेयी ने चुनी हैं। प्रेम, मृत्यु, दुनिया, शब्द, पूर्वज, कलाएँ, घर-पड़ोस आदि थीमों के इर्द-गिर्द बुना हुआ यह संकलन अशोक वाजपेयी के श्रेष्ठ काव्य के आस्वादन का एक नया अवसर भर नहीं जुटाता, वह इस दौरान लिखी गई हिन्दी कविता के कुछ परिष्कृत-जटिल पर सम्प्रेषणीय अंश को भी एकत्र करता है। कवि के पैंसठ वर्ष की आयु पूरी करने पर यह संचयन विशेष रूप से प्रकाशित है।

₹ 1295 HB 9788126711994

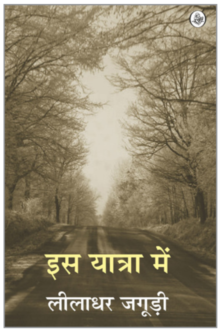

इस यात्रा में (कविता)

— लीलाधर जगूड़ी

लीलाधर जगूड़ी की इन कविताओं में जीवन को उसकी समग्रता में पकड़ने की कोशिश है जो कवि नहीं कर पा हैं। या तो वे अपनी भीतरी दुनिया में रमे रहते हैं या बाहरी दुनिया में भटकते रहते हैं। दोनों दुनियाओं को जोड़ने का प्रयास उनकी इस संग्रह की कविताओं में अक्सर दीखता है। लीलाधर जगूड़ी का यह संग्रह ध्यान से पढ़ा जाना चाहिए।

—सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

₹ 395 HB 9788126717910

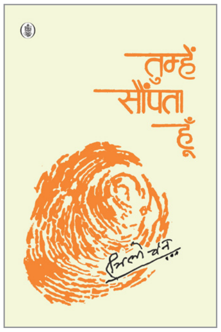

तुम्हें सौंपता हूँ (कविता)

— त्रिलोचन

'तुम्हें सौंपता हूँ' त्रिलोचन की कविताओं का एक विशिष्ट संग्रह है, जिसमें उनकी सन् 1935 से 1983 तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कविताएँ शामिल हैं। वास्तव में त्रिलोचन की कविताएँ दु:खों और विपदाओं के अपार समुद्र में मानवीय सौन्दर्य, प्रेम, आशा और स्वप्न का एक ऐसा घनीभूत पुंज हैं जो हमारे भीतर जीवन के प्रति अगाध विश्वास जगाता है। छोटी-बड़ी इक्यासी कविताओं का यह संग्रह कवि के व्यक्तित्व के कुछ ऐसे आयामों को भी सामने लाता है, जिनसे हिन्दी जगत प्राय: अपरिचित ही रहा है।

₹ 495 HB 9788171193424

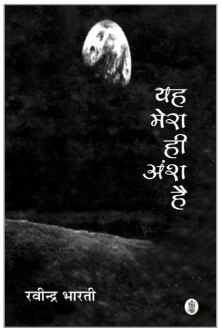

यह मेरा ही अंश है (कविता)

— रवीन्द्र भारती

रवीन्द्र भारती की कविताओं में चारों ओर की वास्तविकताओं से मनुष्य के लिए रचनात्मक संस्कार खोजने की शक्ति दीखती है। अपनापे का यह अनुभव छायावादोत्तर रोमानी मिठास का नहीं, एक संघर्षरत मनुष्य के लौकिक-भौतिक प्रेम का अनुभव है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि उनकी कविता उन दृश्यों को भी साकार कर देती है, जो उसमें लिखे नहीं गए, परन्तु छाया की भाँति इसके तथ्यों से निसृत हैं। कई आयामों को एक में समाहित कर सकने की यह सामर्थ्य आज की कविता में दुर्लभ ही है।

₹ 295 HB 9788171195220

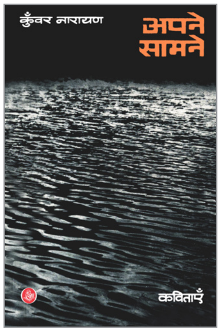

अपने सामने (कविता)

— कुँवर नारायण

जीवन को अनुभूति और चिन्तन के विभिन्न धरातलों पर ग्रहण करनेवाले कवि कुँवर नारायण अपनी कविताओं में सीमाएँ नहीं बनाते; उनकी ज़्यादातर कविताएँ किसी एक ही तरह की भाषा या विषय में विसर्जित-सी हो गई नहीं लगतीं—दोनों को विस्तृत करती लगती हैं। अनेक कविताएँ मानो समाप्त नहीं होतीं, एक ख़ास तरह की हमारी बेचैनियों का हिस्सा बन जाती हैं। इस तरह से देखें तो वे अपने को सिद्ध करनेवाले कवि हमें नहीं नज़र आते।

₹ 395 HB 9788126705627

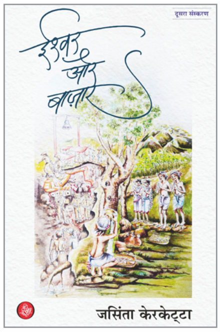

ईश्वर और बाज़ार (कविता)

— जसिंता केरकेट्टा

जल, जंगल और आदिवासी जीवन से बाहर देश के सामान्य हालात भी इस संग्रह की कविताओं में जगह-जगह झाँकते दिखाई देते हैं। सत्ता का तानाशाही मिज़ाज हो या अपने ही देश की सैनिक ताक़त को अपने ही लोगों के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति, कुछ भी कवि की निगाह से नहीं चूकता। यह संकलन निश्चय ही जसिंता की रचना-यात्रा का अगला चरण है। संग्रह में संकलित कई कविताएँ ऐसी हैं जो शोषण के चालाक षड्यंत्रों में ईश्वर की अवधारणा और असहाय जन-मानस में उसके भय की भूमिका को चीन्हती हैं।

₹ 299 PB 9789392757839

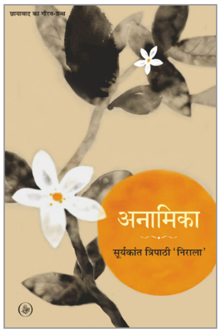

अनामिका (कविता)

— सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

'अनामिका' नाम से निराला की कविताओं का संग्रह दो बार प्रकाशित हुआ। पहली बार 'मतवाला' के सम्पादक बाबू महादेव प्रसाद ने निराला की चौबीस कविताओं का संग्रह 'अनामिका' नाम से प्रकाशित किया था। इसमें निराला की प्रारम्भिक कविताएँ संकलित थीं। 1937 में पुन: 'अनामिका' नाम से ही निराला की कविताओं का संग्रह प्रकाशित हुआ। इसे निराला की श्रेष्ठ कविताओं का संग्रह माना जाता है। 'अनामिका' को छायावाद का 'गौरव-ग्रन्थ' होने का श्रेय प्राप्त है।

₹ 595 HB 9788171782895

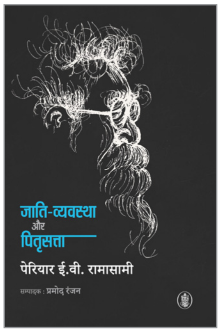

जाति-व्यवस्था और पितृसत्ता (समाज-चिंतन)

— पेरियार ई.वी. रामासामी

'जाति और पितृसत्ता' ई.वी. रामासामी नायकर 'पेरियार' के चिन्तन, लेखन और संघर्षों की केन्द्रीय धुरी रही है। उनकी दृढ़ मान्यता थी कि इन दोनों के विनाश के बिना किसी आधुनिक समाज का निर्माण नहीं किया जा सकता है। जाति और पितृसत्ता के सम्बन्ध में पेरियार क्या सोचते थे और क्यों वे इसके विनाश को आधुनिक भारत के निर्माण के लिए अपरिहार्य एवं अनिवार्य मानते थे? इन प्रश्नों का हिन्दी में एक मुकम्मल जवाब पहली बार यह किताब देती है।

₹ 199 HB 9788183619615

सहज साधना (आलोचना)

— हजारीप्रसाद द्विवेदी

'सहज-साधना' आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की अत्यंत महत्त्वपूर्ण कृतियों में से एक है, क्योंकि इससे उनके सर्वोपरि विवेच्य—मध्यकाल को सही परिप्रेक्ष्य में सहज ही समझा-समझाया जा सकता है। कबीर के अनुसार, माया से बद्ध जीव इस जगत को मिथ्या समझता है। ऐसा समझनेवाले योगियों को वे अज्ञानी कहते हैं। मोक्ष प्राप्ति के लिए संसार से भागना अथवा योग और तंत्र के कृच्छाचार का निर्वाह करना सच्ची साधना नहीं, बल्कि सच्ची साधना कर्म करते हुए अपने बाहर और भीतर ईश्वरीय सत्ता का अनुभव करना है।

₹ 395 HB 9789360866211

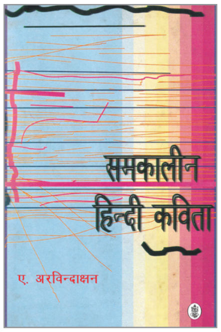

समकालीन हिन्दी कविता (आलोचना)

— ए. अरविन्दाक्षन

अरविन्दाक्षन ने समकालीन हिन्दी कविता को सत्ता-मीमांसा का विवेचन करते हुए, एक प्रकार से इस चुनौती को स्वीकार किया है कि समकालीनता की पहचान आसान नहीं, इससे बचना चाहिए। वास्तविकता यह है कि अपने समय से आँख मिलाए बिना न रचना सम्भव है, न आलोचना। निराला को समकालीनता के पूर्वाभास रूप में देखते हुए यह पुस्तक नागार्जुन, मुक्तिबोध से लेकर कवि एकान्त श्रीवास्तव तक आती है और लगभग सभी कवियों की समकालीनता को उजागर करती है। —डॉ. प्रेमशंकर

₹ 495 HB 9788171196364

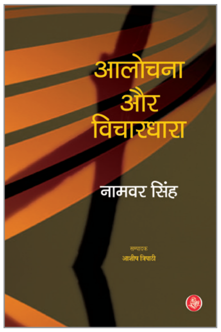

आलोचना और विचारधारा (आलोचना)

— नामवर सिंह

'आलोचना और विचारधारा' डॉ. नामवर सिंह के व्याख्यानों का संग्रह है। इन व्याख्यानों के केन्द्र में 'आलोचना' है। संकलित 22 व्याख्यान किसी निश्चित परियोजना के तहत नहीं दिए गए हैं। इसीलिए इनमें कोई पूर्व निश्चित सिलसिला नहीं है। इन व्याख्यानों का समय भी दो दशक से अधिक तक फैला हुआ है। बावजूद इसके इनमें एक आन्तरिक एकता और सुसम्बद्धता है। नामवर जी के व्याख्यानों की यह दूसरी पुस्तक है।

₹ 895 HB 9788126722532

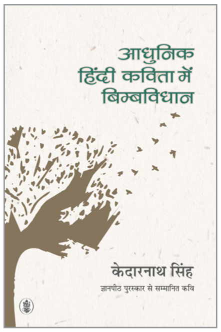

आधुनिक हिंदी कविता में बिम्बविधान (आलोचना)

— केदारनाथ सिंह

आधुनिक हिंदी कविता में बिम्बविधान का यह नया संस्करण एक ऐसे साहित्यिक दौर में प्रकाशित हो रहा है, जब बिम्ब हिंदी काव्यालोचन का स्वीकृत शब्द बन चुका है। परन्तु जिस समय (लगभग छठे दशक के अन्त में) यह शोधकार्य सम्पन्न हुआ था, उस समय तक हिंदी में बिम्ब-विचार की कोई सुस्पष्ट परम्परा नहीं बन सकी थी। यह पुस्तक उस दिशा में पहले महत्त्वपूर्ण प्रयास के रूप में सामने आई थी। यहाँ पहली बार भारतीय परम्परा में बिम्ब-विचार के मूल स्रोतों को सुसंगत ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश की गई थी।

₹ 995 HB 9788171191994

हिंदी उपन्यास का स्त्री-पाठ (आलोचना)

— रोहिणी अग्रवाल

यह पुस्तक प्रतिष्ठित रचनाकारों के दायित्वपूर्ण योगदान को धुँधलाने की धृष्टता नहीं, आलोचना के पुंसवादी स्वर के बरअक्स स्त्री-स्वर को धार देने की कोशिश है। यों भी साहित्य शब्दों-पंक्तियों-पन्नों-जिल्द में बँधी हदबन्दियों का मोहताज नहीं कि लाइब्रेरियों में पड़ा सड़ता रहे। जब वह एक नई समाज-संस्कृति, विचार या चरित्र बनकर लौकिक जगत के बीचोबीच आ बैठता है, तब उसे नई चुनौतियों और नए बदलावों के बीच निरन्तर अपने को प्रमाणित भी करते रहना पड़ता है।

₹ 795 HB 9788126728732

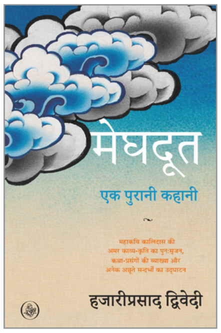

मेघदूत : एक पुरानी कहानी (आलोचना)

— हजारीप्रसाद द्विवेदी

'मेघदूत : एक पुरानी कहानी' महाकवि कालिदास की अमर काव्य–कृति का पुन:सृजन है। द्विवेदी जी ने इसमें 'मेघदूत' के कथा–प्रसंगों की व्याख्या के बहाने उन अछूते सन्दर्भों का भी उद्घाटन किया है जो इसकी रचना–प्रक्रिया के दौरान कालिदास के मन में रहे होंगे। आचार्य द्विवेदी की प्रकाण्ड मेधा, विनोदवृत्ति और विलक्षण सृजनात्मक क्षमता से युक्त 'मेघदूत' की यह कहानी निस्सन्देह एक अविस्मरणीय कृति है।

₹ 395 HB 9789360866211

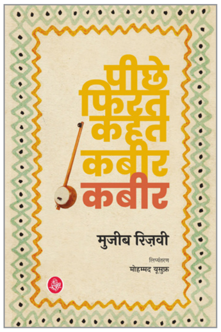

पीछे फिरत कहत कबीर कबीर (आलोचना)

— मुजीब रिज़वी

तुलसी के राम में अनीस के हुसैन की झलक देखनी हो, कबीर में क़ुरान की आयतों का असर समझना हो, अनीस के मर्सियों में संस्कृत शेरियात की तलाश हो, तुलसी और जायसी का मुवाज़ना करना हो, हसरत मोहानी के कन्हैया को भगतों की राधा में खोजना हो, इस किताब में मुजीब रिज़वी उर्दू-हिंदी साहित्य को नए पैमानों और नए कीर्तिमानों से स्थापित और विश्लेषित करते नज़र आते हैं।

₹ 895 HB 9789393768001

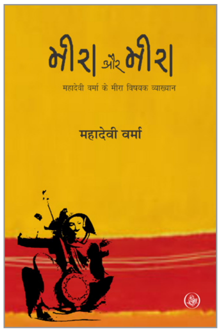

मीरा और मीरा (आलोचना)

— महादेवी वर्मा

यह किताब छायावाद की मूर्तिमान गरिमा महीयसी महादेवी वर्मा के चार व्याख्यानों का संग्रह है। महादेवी जी ने ये व्याख्यान जयपुर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की राजस्थान शाखा के निमंत्रण पर दिए थे। इन चार व्याख्यानों के शीर्षक हैं–मीरा का युग, मीरा की साधना, मीरा के गीत और मीरा का विद्रोह। इनमें महादेवी ने मध्यकालीन स्त्री की स्थिति का विशेष सन्दर्भ लेकर भक्ति, मुक्ति, आत्मनिर्णय, विद्रोह और निजपथ-निर्माण आदि को विश्लेषित किया है।

₹ 395 HB 9788126724949

नये संस्करण : अप्रैल, 2024

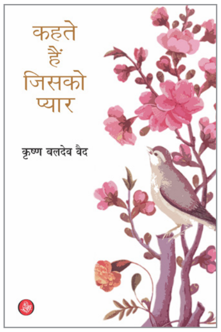

कहते हैं जिसको प्यार (नाटक)

— कृष्ण बलदेव वैद

कृष्ण बलदेव वैद के कथा साहित्य से जिन पाठकों का परिचय है, वे जानते हैं कि उन्हें मनुष्य-जीवन के नाटकीय सन्दर्भों की गहरी पहचान है। यहाँ भी वैद जीवनगत घटनाओं को सायास नाटकीय बनाने के बजाय जीवन में निहित नाटक को पकड़ते हैं। यहाँ तक कि सामान्य लगते रंग-संकेतों को भी नाटकीय प्रसंग के रूप में विन्यस्त करने का सामर्थ्य उन्होंने प्रदर्शित किया है।

₹ 395 HB 9788126708277

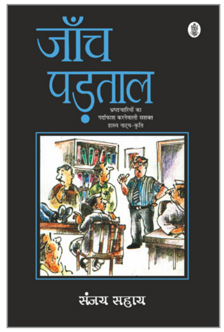

जाँच पड़ताल (नाटक)

— संजय सहाय

भाषा, रूप, चरित्र, अंतर्वस्तु और अर्थध्वनियों के स्तर पर दिक् और काल के अपार आयामों में गूँजती हुई गोगोल की सशक्त कृति के भीतर से सर्जनात्मक अंतर्यात्रा करते हुए 'जाँच-पड़ताल' के लेखक ने समसामयिक भारतीय संदर्भों में अपरोक्ष अभिप्रायों से लैस एक नई रंग-आकृति रचने-ढालने की कोशिश की है ! अनुकृति या अंतरण से भिन्न यह नाट्य-रचना देश, समाज, भाषा और युग के भिन्न संदर्भों में मूल कृति का ही पुनराविष्कार है, जिसमें उनकी अशेष रचनात्मक संभावनाओं का संदोहन है

₹ 395 HB 9788171192564

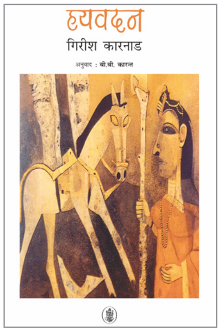

हयवदन (नाटक)

— गिरीश कारनाड

स्त्री-पुरुष के आधे-अधूरेपन की त्रासदी और उनके उलझावपूर्ण सम्बन्धों की अबूझ पहेली को देखने-दिखाने वाले नाटक तो समकालीन भारतीय रंग-परिदृश्य में और भी हैं; लेकिन जहाँ तक सम्पूर्णता की अन्तहीन तलाश की असह्य यातनापूर्ण परिणति तथा बुद्धि (मन-आत्मा) और देह के सनातन महत्ता-संघर्ष के परिणाम का प्रश्न है—गिरीश कारनाड का 'हयवदन', कई दृष्टियों से, निश्चय ही एक अनूठा नाट्य-प्रयोग है। इसमें पारम्परिक अथवा लोक नाट्य-रूपों के कई जीवन्त रंग-तत्त्वों का विरल रचनात्मक इस्तेमाल किया गया है।

₹ 199 PB 9788183613774

रंगदर्शन (नाटक)

— नेमिचन्द्र जैन

इस किताब में जहाँ एक ओर रंगशाला, नाट्य-प्रशिक्षण, दर्शक-वर्ग, व्यावसायिकता आदि का गम्भीरता से विश्लेषण है, वहीं दूसरी ओर उसमें नाटक का अध्ययन, रचना-प्रक्रिया, नाट्य-रूप और भाषा, परम्परा की प्रासंगिकता, रंगदृष्टि की खोज आदि मुद्दे उठाकर भारतीय रंगालोचना को पुष्ट बौद्धिक ऊर्जा और आभा देने की कोशिश है। यह अकारण नहीं है कि हिन्दी के अलावा बांग्ला, मराठी, अंग्रेज़ी आदि में भी इस पुस्तक को दिशादर्शी और महत्त्वपूर्ण माना गया है।

₹ 895 HB 9788171193318

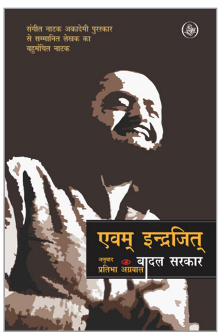

एवम् इन्द्रजित् (नाटक)

— बादल सरकार

बादल सरकार के नाटक 'एवम् इन्द्रजित्' का भारतीय रंगकर्म में एक विशिष्ट स्थान है। मूलत: बांग्ला में लिखे इस नाटक का अनेक भारतीय भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। विभिन्न भाषाओं के रंगकर्म में इस नाटक ने बार-बार मंचित होकर प्रशंसा और प्रसिद्धि पर्याप्त बटोरी है। इस नाटक की लोकप्रियता का कारण इसके कथा व शिल्प में निहित है। युवा वर्ग की महत्त्वाकांक्षा, परवर्ती कुंठा व निराशा का यथार्थपरक चित्रण इसमें किया गया है। नाटक अपनी निष्पत्ति में रेखांकित करता है कि मृत्यु का वरण समस्या का समाधान नहीं है।

₹ 395 HB 9788126726141

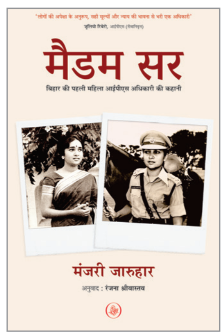

मैडम सर (संस्मरण)

— मंजरी जारुहार

यह किताब सुरक्षित वातावरण में पली एक लड़की के भारतीय पुलिस सेवा की सबसे अगली कतार तक पहुँचने का मर्मस्पर्शी विवरण है। यह एक ऐसी स्त्री द्वारा साहस, दृढ़ता और नेतृत्वकला का सबक़ है जिसने सहकर्मियों का अविश्वास और उपहास सहते हुए भी नए-नए रास्ते खोजे और सफलता पाई। यह कहानी आपको अपने सपने पूरे करने की प्रेरणा और असम्भव ऊँचाइयाँ छूने की हिम्मत देगी।

₹ 399 PB 9788119835157

माधवी (नाटक)

— भीष्म साहनी

प्रख्यात लेखक भीष्म साहनी का यह तीसरा नाटक 'माधवी' महाभारत की एक कथा पर आधारित है। अनूठे और मर्मस्पर्शी घटना-चक्र से गुज़रते हुए, इस नाटक के प्रधान पात्र—माधवी, गालव, ययाति, विश्वामित्र और अनेक राजागण अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं, और एक विकट, हृदयग्राही मानवीय स्थिति के परिप्रेक्ष्य में, ये चरित्र नए-नए आयाम ग्रहण करते हैं। इनके केन्द्र में ययाति-कन्या माधवी है, जो लगभग एक अलौकिक मिथकीय परिवेश में रहते-बसते हुए भी अत्यधिक सजीव, सर्वथा प्रासंगिक और आकर्षक बनकर उभरती है।

₹ 199 PB 9789387462120

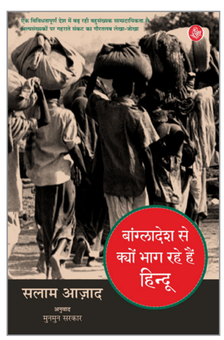

बांग्लादेश से क्यों भाग रहे हैं हिन्दू (आलेख)

— सलाम आज़ाद

यदि हिन्दू समुदाय का कोई नागरिक यह देश छोड़कर न जाता तो आज बांग्लादेश में हिन्दुओं की आबादी कोई तीन करोड़ होती। लेकिन हिन्दू इस देश को छोड़कर क्यों जा रहे हैं? हिन्दुओं के देश-त्याग के मूलत: पाँच कारण इस पुस्तक में रेखांकित किए गए हैं। ये हैं—साम्प्रदायिक उत्पीड़न, साम्प्रदायिक हमले, शत्रु अर्पित सम्पत्ति क़ानून, देवोत्तर सम्पत्ति पर क़ब्ज़ा और सरकारी नौकरियों में हिन्दुओं की उपेक्षा एवं भेदभाव।

₹ 199 PB 9788126730100

चर्चा में किताब

जिस देश और समाज के हम आप बाशिंदे हैं, उसकी शहतीरों को विरासत व पुरातन गौरव के नाम पर किस तरह खोखला किया जा रहा है। क्या है भारतीय गणराज्य का वर्तमान संकट? कौन हैं इसके जिम्मेदार? इस सबका खुलासा करने वाली किताब The Crooked Timber of India अब हिन्दी अनुवाद में उपलब्ध है, इसके लेखक हैं चर्चित लेखक व बुद्धिजीवी परकाला प्रभाकर। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य पर इस विस्फोटक किताब के लेखक का एक परिचय यह भी है कि परकाला प्रभाकर भारत सरकार की वित्तमंत्री निर्मला सीतारमन के पति भी हैं । मौजूदा दौर में हिन्दी के पाठकों के लिए इस पुस्तक का प्रकाशन विशेष महत्त्व की साहसिक घटना है। मीडिया के कौव्वारोर से मुक्त होकर इस पुस्तक का पढ़ा जाना स्वयं को एक जागरूक नागरिक के रूप में समृद्ध करना है। **—वीरेन्द्र यादव, *फ़ेसबुक***

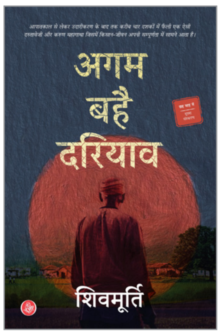

यह उपन्यास उत्तर भारत के ग्राम्य जीवन, विशेषकर किसान जीवन और स्थानीय स्तर पर जातीय सम्बन्धों की जकड़न , तद्जनित शोषण एवं सरकारी कर्मचारियों, थाना, कचहरी के भ्रष्टाचार से उपजी पेचीदगियों की एक तरफ़ गहराई से पड़ताल करता है तो दूसरी ओर आर्थिक उदारीकरण ,पिछड़े वर्गों में आई नई राजनीतिक चेतना तथा हिन्दुत्ववादी राजनीति के उभार द्वारा जनित स्थितियों को भी रेखांकित करता है। यह उपन्यास हिन्दी में 'गोदान', 'राग दरबारी' और कुछ सीमा तक 'मैला आँचल' की परम्परा की अगली और नवीनतम कड़ी है। 'गोदान' 1930 के दशक में प्रकाशित हुआ था, तो 'राग दरबारी' '1960' के दशक में, इक्कीसवीं सदी का हिन्दी पाठक, विशेषकर 1990 के बाद जन्मी पीढ़ी अपने लाख ग्रामीण संस्कारों के बावजूद, 'गोदान' के होरी या धनिया से उस तरह का परिचय नहीं बिठा पाता, या 'राग दरबारी' के बैद जी, सनीचर, लंगड़, बद्री पहलवान से उतना परिचित नहीं हो पाता जितना 'अगम बहै दरियाव' के संतोखी हज़ाम, छत्रधारी ठाकुर, माठा बाबा, हिंसक क्रांतिकारी जंगू, अम्बेडकर वादी दलित वकील तूफानी या गाँव के जमींदार से लोहा लेने वाले विद्रोही जी जैसे चरित्रों से फौरी तादात्म्य बिठा सकता है। इक्कीसवीं शताब्दी के भारतीय ग्रामीण समाज में 'होरी', या 'बैद जी' जैसे चरित्रों की उपलब्धता, प्रामाणिकता हो या न हो, 'संतोखी' और 'छत्रधारी' की तो लगभग हर गाँव में अनिवार्य उपस्थिति होगी। **— संतोष चौबे, *फ़ेसबुक***

राजकमल चौधरी का यह चर्चित उपन्यास स्त्री समलैंगिकता पर आधारित होने के लिए चर्चा में था। इस्मत चुगताई की 'लिहाफ' पढ़ने के बाद मुझे ऐसा लग रहा था कि आखिर इसमें क्या खास होगा जो इसे कालजयी उपन्यास की श्रेणी में रखा जाए। आखिर आपा ने काफ़ी वर्ष पहले इस विवादित विषय पर लिख ही दिया था। जब पढ़ने बैठी तो आधी कहानी तक किसी स्त्री समलैंगिक सम्बन्ध की कहीं कोई चर्चा नहीं थी। लेकिन ह्यूमन साइकोलाजी का एनसाइक्लोपीडिया है ये उपन्यास जिसमें स्त्री पात्र ही नहीं पुरुष पात्र भी विकृत मनोदशा के शिकार हैं। ये मानसिक विकृति उनके व्यक्तित्व पर इस तरह हावी है कि निर्मल पद्मावत जैसा मुख्य पात्र सामान्य जीवन जीते हुए भी खूँखार और हिंसक भेड़िए की भाँति स्त्री को नोचता और खसेटता है। कहानी की यह मूल विशेषता है कि लेखक ने पात्रों की मानसिक विकृति के पीछे की परत को छीलने का काम किया है। उन हिंसक कारनामों के पीछे की वजह जानना और उसका निराकरण करना ही एक अच्छे मनोवैज्ञानिक का लक्षण होता है... **—संगसार सीमा, *फ़ेसबुक***

ग्यारह कहानियों का संकलन 'आएँगे अच्छे दिन भी' कुछ समय पूर्व छपकर आया है। हालाँकि यह संग्रह वर्षों पहले प्रकाशित हुआ था, जिसका पुनर्प्रकाशन अब किया गया है। लेकिन इन कहानियों का मिजाज और इन्हें कहने का अन्दाज ऐसा दिलचस्प है कि इन्हें बार-बार पढ़ा जा सकता है। दरअसल, ये कहानियाँ हमारे समय की विसंगतियों और व्यक्तिगत मानवीय जीवन की विडंबनाओं को बिना किसी लाग-लपेट के सामने लाती हैं। यहाँ हर कहानी का कथानक तो अलग है ही, इनके कहन की शैली और भाषा में भी विविधता देखी जा सकती है। **— हरिभूमि**

मनोज कुमार पांडेय ने प्रेम कविता को हिन्दी में एक ऊँचाई दी है। इस संग्रह की कविताएँ पढ़कर यह बात नि:संकोच कही जा सकती है। यह ऊँचाई कोई चकाचौंध या जादू जैसे गड़बड़झाले से सम्भव नहीं हुई है। वे हिन्दी कविता को वहाँ ले जाते हैं जहाँ से प्रेम अपना आदिम रूप अपनी ही आँखों देख सके। वे प्रेम में उस परदे की अहमियत समझते हैं जिसने स्वार्थों के प्रदूषण निकृष्टता के निमित्त नैतिकता और अनैतिकता की दीवार बनाते हैं। जहाँ से रहस्यों का व्यापार भाषा में वर्चस्व की संस्कृति को संस्कृतिकरण की ताकत देता है। **— शैलेन्द्र कुमार शुक्ल, *जनसंदेश टाइम्स***

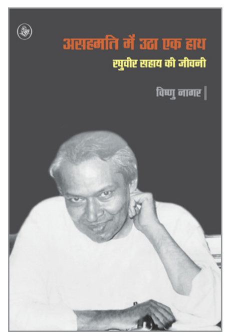

विष्णु नागर ने रघुवीर सहाय की जीवनी 'असहमति में उठा एक हाथ' मन लगा कर लिखी है।उनका रघुवीर सहाय से दशकों तक सम्बम्ध रहा। इस दौरान उन्होंने रघुवीर सहाय को विविध रूपों में नज़दीक से देखा-जाना। उनसे सहमत-असहमत हुए। उन्होंने यह किताब लिखकर अपने व्यक्तिगत, सामाजिक और लेखकीय कर्तव्य का पालन किया है और इसे ऐसे लिखा है कि यह केवल कर्तव्यपालन नहीं, सर्जनात्मक खोज बन गई है। इस किताब में रघुवीर सहाय की रचनाओं और उनकी जीवन कथा को विष्णु नागर ने बख़ूबी दर्ज किया है। लेखक ने रघुवीर सहाय के व्यक्तित्व, उनके स्वभाव, उनकी जीवनचर्या को नज़दीक से देखा और उस पर विचार किया है और उस समय को अपने ढंग से गढ़ा है, उसे विभिन्न अंशों में व्यवस्थित किया है। शायद कहेंगे कि अपना एक नैरेटिव तैयार किया है। **— विश्वनाथ त्रिपाठी, *नया ज्ञानोदय***

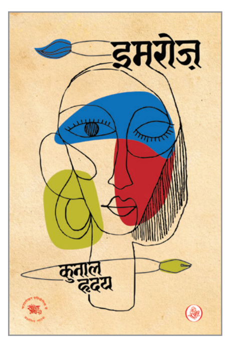

'इमरोज़' साहित्यिक जगत के एक अत्यन्त चर्चित और लगभग मिथकीय गरिमा हासिल कर चुके प्रेम—सम्बन्ध को नए और प्रासंगिक ढंग से प्रस्तुत करता नाटक है। अमृता प्रीतम और इमरोज़ के सम्बन्धों की कहानी न तो अनजानी है, न ही अस्पष्ट। इस कहानी के सिरे साहिर लुधियानवी और प्रीतम सिंह से भी जुड़ते हैं। लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि इस कहानी के नायक इमरोज़ हैं और नायिका अमृता। मुश्किल यह है कि साहित्य-जगत में अमृता का मुक़ाम इतना ऊँचा और उनका असर इतना व्यापक है कि उसकी विशाल छाया में समर्पित हृदय इमरोज़ का व्यक्तित्व प्राय: ओझल-अदेखा रह गया है। युवा नाटककार कुनाल हृदय ने इसी अदेखे पक्ष को अपने इस नाटक में अत्यन्त प्रभावी ढंग से पेश किया है जिसमें इमरोज़ एक उदात्त प्रेमी के रूप में सामने आते हैं। इमरोज़ में रिश्तों की एक बारीक गुत्थी खुलती है जो इनसानी स्वभाव के बेहद नाज़ुक लेकिन ज़रूरी पक्ष पर रोशनी डालती है इसमें उम्मीद और असलियत का टकराव तो है, पर प्रेम के लिए हाथ बढ़ा चुका इमरोज़ अहंकार को बीच में एकदम नहीं आने देता। **—समय पत्रिका**

चर्चा में किताब

मनोवैज्ञानिक तौर पर प्रत्येक किरदार का सही चित्रण किया गया है। कहीं भी किसी भी किरदार को ज़रूरत से ज़्यादा अच्छा या बुरा बनाने की कोशिश नहीं की गई है। इस उपन्यास को पढ़कर लगा कि विवाहेतर सम्बन्धों का सामाजिक, वैयक्तिक और मनोवैज्ञानिक पक्ष सटीक तरीके से दिखाया गया है।

— वीरेन्द्र, *फ़ेसबुक*

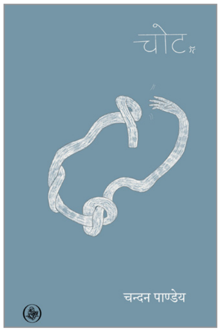

'चोट' ने अपने विषय और विन्यास में रचनात्मक निस्पृहता का जो निर्वाह किया है, उसके भीतर पिछली पीढ़ी की गैर रूमानियत बरतने की ख़ूबी जैसे बहुत मैच्योर होकर आई है और बहुरुपी यथार्थ में से उसे चुना है जिसमें प्रोफ़ेशनलिज्म का चतुर से अधिक कमीना रूप मौजूद है। कहानियाँ गाँव क़स्बे और महानगर की हैं। मनुष्य के दबकर रहने की जो तफ़सील है, वह स्थिति परिस्थिति भर नहीं है। कहानियों के शीर्षक कहीं चोट और गाँठ जैसे मुख़्तसर से हैं तो कहीं कथा युक्ति का अपराधबोध जैसे नए नकोरे हैं भाषा वही कि कथा किसी बिचौलिए के बिना अर्थ में और कला में भी खुल उठे। कहानियों को पढ़कर जो महसूस हुआ है कि सरपट इन्हें पढ़कर खाली नहीं हुआ जा सकता भाई! **—चन्द्रकला त्रिपाठी, *फ़ेसबुक***

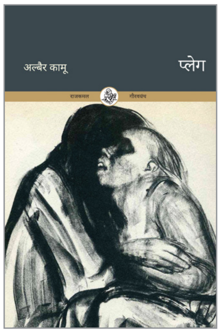

इस उपन्यास में ओरान नामक एक शहर में महामारी के फैलने और पूरे शहर के अलग-थलग पड़ जाने और प्लेग से लड़ने की कहानी है। जहाँ के निवासी इस असाधारण आपदा के प्रति अलग-अलग तरह से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। उपन्यास का एक पात्र रीयो संक्रमण के ख़तरे को समझते हुए और अपने पारिवारिक जीवन की समस्या को पीछे रखकर मरीज़ों की जान बचाने में जुट जाता है। जबकि एक अन्य पात्र कोटार्ड महामारी को अच्छा अवसर समझकर चोरबाज़ारी के ज़रिए कमाई करने में जुट जाता है। दूसरे कई पात्र दूसरी तरह से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इन सबके ज़रिए कामू बतलाते हैं कि पीड़ा और मृत्यु के विरुद्ध संघर्ष में स्वेच्छा से अपना उत्तरदायित्व निभाने में ही मानवीय भविष्य बचा रह सकता है। इस तरह वे जीवन के बेतुकेपन से विद्रोह करने का एक नैतिक विचार प्रस्तुत करते हैं। **— कृष्णा वी चौधरी, *फ़ेसबुक***

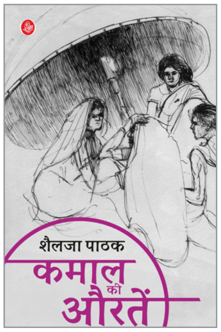

'कमाल की औरतें' संग्रह में सब तरह की औरतें मौजूद हैं—पीड़ित, अकेली, विद्रोही, दाम्पत्य को छिन्न-भिन्न करने को आतुर भी, और दाम्पत्य में खप जाने को तत्पर भी जिन्हें शैलजा पाठक की भाव-प्रवण भाषा में अभिव्यक्ति मिली है—बिलकुल ऐसे जैसे दोपहर बाद के सुस्ताते समय की बतकहियों में। इनमें से कई औरतें हैं जिन्हें प्रचलित स्त्री-विमर्श अच्छे से जानता है, लेकिन कुछ हैं जिनके दुख पर आधुनिक दृष्टि उस तरह नहीं पड़ी। यह अच्छी बात है कि उन्हें लेकर इस संग्रह में पर्याप्त कविताएँ हैं। समय से पहले बूढ़ी होती बहनें-बुआएँ—नैहर और ससुराल के बीच की धूल उड़ाती पगडंडियों पर जिनके असंख्य दुख अदेखे -ग़ायब हो जाते हैं-इन कविताओं में उन्हें पढ़ना दुख के किसी टापू पर अचानक पहुँच जाने जैसा है... स्तब्धकारी! **— समय पत्रिका**

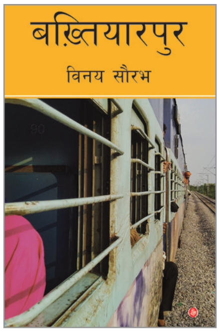

फेसबुक वाल पर पढ़ी थी और वह मुझे इतनी पसन्द आई कि उसे शेयर किया। कविता का शीर्षक था 'बख़्तियारपुर'। बख़्तियारपुर पटना जिले का एक क़स्बा है, जहाँ से होकर दिल्ली-कोलकाता की मुख्य रेल लाइन गुजरती है। इसी नाम से यहाँ एक छोटा स्टेशन भी है। यह देश के हज़ारों क़स्बों में से एक है। लेकिन यह कवि विनय सौरभ की एक कविता का शीर्षक भी है। मैं आह्लाद से भर गया, जब पिछले महीने इसी शीर्षक से कवि का संकलन मेरे पास डाक से पहुँचा। यह उनका पहला संकलन है। राजकमल पेपरबैक्स से बस इसी वर्ष प्रकाशित उनके इस संकलन में उनकी कुल अट्ठासी कविताएँ हैं। बख़्तियारपुर ने मेरा ध्यान इसलिए आकर्षित किया कि यह बहुत सहज संवेदना से हमें जोड़ती है। **—प्रेमकुमार मणि, *फ़ेसबुक***

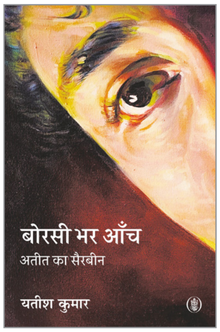

'बोरसी भर आँच' जो लेखक को ऊर्जा तो देती ही है अपने वंचित बाल जीवन को दोबारा मुड़कर देखने को प्रेरित भी करती है, केवल एक संस्मरण या जीवनी नहीं है,वयस्क होकर उस अतीत का पुन: निरीक्षण और समाज की मान्यताओं पर सटीक टिप्पणी भी है। अक्सर लोग जीवन की प्रवंचनाओं को गले में हार डालकर पहन लेते हैं,परन्तु उस विगत में जाना,वयस्क और समर्थ होकर उन बातों और अपने को तोलना और फिर उन्हें तटस्थ भाव से प्रस्तुत करना उस जीवन का पुन: मूल्यांकन करना है,जिसे यतीश कुमार एक सहृदय कवि की दृष्टि से देखते,तोलते,और सम्पादन करने के बाद ऐसे प्रस्तुत करते हैं जिसमें एक बालक की अबोध दृष्टि और कवि की संवेदना भी है। **— उषा प्रियम्वदा, *फ़ेसबुक***

हमारे सामाजिक ढाँचे में महिलाओं को जिस तरह से गढ़ा गया है, उसके कई पक्ष हमने अपने जीवन में या तो स्वयं अनुभव किए होते हैं या किसी और को अनुभव करते हुए देखते हैं। उन सभी पक्षों को अपने नजरिए से देखते हुए कवि और पत्रकार अंकिता आनंद ने अपने कविता-संग्रह 'अब मेरी बारी' में संकलित कविताओं के रूप में हमारे सामने रखा है। — **राज बैरवा, *विराट वैभव***

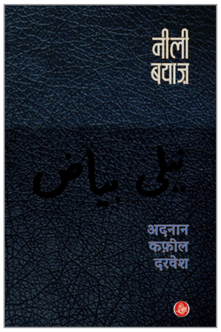

In the philosophy of Zen, to channelize our anger towards an act that does not harm anyone finds a very important place to maintain homeostasis. 'Neeli Bayaaz', the second collection of poetry by Adnan Kafeel Darwesh, is a document that makes us read about a raw form of anger and love sitting on two opposite poles to balance the system. The blue of this book is the sky that fell on a river just to wipe the palpitations of a strong hatred. In the meantime, it also feels the pungent smell of a million dead dreams, and even they need the shade made of pages. Something through which they will be heard and maybe, accepted. The objective of this book is enormous, but it goes beyond the blossoms and benevolence to be amidst those who need to listen to a deafening cry of the remains of the worldly time.— **Kabeer Deb, *Facebook***

चर्चा में किताब

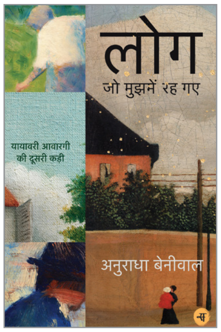

हमारे बौद्धिक समाज में आए दिन कोई न कोई विमर्श होता रहता है। ऐसे में अनुराधा की यह किताब स्त्री विमर्श को नए सिरे से व्याख्यायित करती नज़र आती है मुझे । स्पष्टता के साथ कहा जा सकता है कि यह किताब 'स्त्री विमर्श' को ध्यान में रखकर नहीं लिखी गई है। यहाँ लेखिका की यात्राओं के दौरान उसमें रह गए लोगों की अभिव्यक्ति मात्र है, लेकिन उसका अपना एक विशेष दर्शन है, एक विशेष शैली है और उस शैली का सहज प्रवाहित रूप है । यहाँ आप किसी विमर्श में नहीं फँसते हैं लेकिन ज़माने से चले आ रहे विमर्श को सहज ही अपने अन्दर समझा हुआ सा महसूस करने लगते हैं। 'यायावरी आवारगी' सीरीज की यह दूसरी किताब है अनुराधा की। यहाँ वह, बहुत कुछ है जो यात्रा विवरण की किताब 'आजादी मेरा ब्रांड' में कहने से रह गया था । वह लोग समाए हैं इसमें जो लेखिका की यात्रा में उसके अन्दर रह गए। **— सुनील मानव, *फ़ेसबुक***

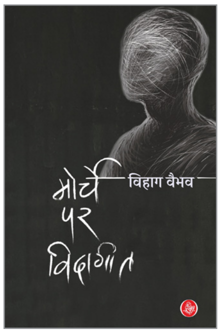

'मोर्चे पर विदागीत' कवि विहाग वैभव का प्रथम काव्य संग्रह है। इससे पूर्व इनकी कविताएं हिन्दी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। इनकी कविताएं दूसरी भाषाओं में भी अनुवाद हो चुकी हैं। कवि ने अपनी कविताओं में वंचित शोषित समाज और हाशिये पर धकेले गए लोगों द्वारा झेले जा रहे जुल्मों का उल्लेख किया। उन्होंने जातिगत समाज के दंश के ज़हर को पीने की पीड़ा को बहुत गहरी संवेदना और दर्द की गहराई के साथ प्रस्तुत किया है। इस दृष्टि से यह काव्य-संग्रह हमारे समय का प्रामाणिक दस्तावेज है। **— सुदर्शन गासो, *दैनिक ट्रिब्यून***

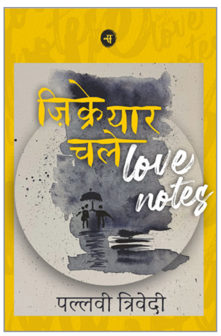

दुनिया के एक शहर में कोई लड़का कविता लिखता है, तब बारिश होती है और दूसरे शहर में जब कोई लड़की कविता पढ़ती है, तब बारिश होती है। — पल्लवी त्रिवेदी सच, जीवन के कितने-ही रंग-रूप हों, गुण-दोष हों, आकार-प्रकार हो, जीवन की तलाश प्रेम से ही शुरू होती है और उसी पर ख़त्म। उसी प्रेम की ताउम्र सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है और उसी की कमी भी सबसे अधिक खलती है। यही एक भाव है जो भोगी को योगी बना देता है और शैतान को इन्सान। पर यह कभी अकेले नहीं आता, इसके साथ आती है उम्मीद, अपेक्षा, शिकायत, ग्लानि, शंका, उदासी, आस्था, ईर्ष्या, बेचैनी और भी बहुत कुछ... इसी प्रेम के विविध लम्हों और रंगों को, उसकी आहट और उसके खोने को, उसके आँसू और मुस्कानों को बड़ी शिद्दत से बयां किया है लेखिका पल्लवी त्रिवेदी ने अपनी पुस्तक 'ज़िक्रे यार चले लव नोट्स' में। **— अपूर्वा बैनर्जी, *जानकीपुल***

राहुल सांकृत्यायन ने यों ही नहीं कहा था कि 'क्यों दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह हजार की भीड़ एकत्र होती है भिखारी के नाटकों में दर्शकों की। लगता है इसी में आमजन को रस मिलता है।' तैयब हुसैन ने 'भिखारी ठाकुर : अनगढ़ हीरा' नामक अपनी पुस्तक में भिखारी ठाकुर के जीवन और उनके सांस्कृतिक-साहित्यिक अवदान पर जो वैचारिक मंथन किया है, वह सटीक और प्रेरणीय है। **— राजकिशन नैन, *दैनिक ट्रिब्यून***

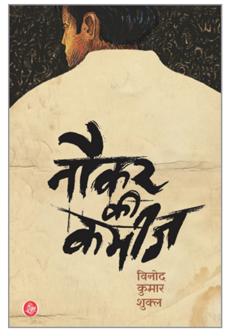

'नौकर की कमीज' का प्रथम प्रकाशन 1979 में हुआ था। उपन्यास के लेखक विनोद कुमार शुक्ल हैं। उपन्यास में एक संतू बाबू हैं, वे एक विभाग में क्लर्क हैं। एक डॉक्टर के मकान में अपनी पत्नी के साथ किराए पर रहते हैं। अपना काम ईमानदारी से करते हैं और विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार के प्रति उनके मन में एक असंतोष है। उपन्यास में नौकर की कमीज लोकतांत्रिक व्यवस्था में पीछे छूट गए (जानबूझकर छोड़ दिए गए) और हर व्यवस्था में शोषित जन का रूपक है। इस बात को समझने के लिए तत्कालीन परिस्थितियों की पड़ताल करनी ज़रूरी है। उपन्यास 1979 में प्रकाशित हुआ, आपातकाल के ठीक बाद। उस समय की आर्थिक स्थिति के साथ-साथ दफ़्तरों में नौकरशाही की स्थितियों पर एक नजर डालनी चाहिए। **— महेश कुमार, *जानकीपुल***

पहली ही कहानी ने बाँध लिया और किताब बस ख़त्म होने को है लेकिन मेट्रो तो अभी भी चल ही रही है और जिन्दगी भी। देवेश जितनी बारीकी से मानवीय सम्बन्धों और भावों को पकड़ते हैं और उसे आपके सामने रखते हैं मन से निकलता है अजब है भाई। ये मात्र कहानियाँ नहीं हैं जीवंत भाव हैं शायद देवेश के मन की तरह स्नेहयुक्त और सरल से। ये क़िस्से पढ़िए तो लगता है जैसे किसी ने सम्बन्धों को माला की तरह पिरो दिया है। स्नेह है गहरा कि मेट्रो छोड़ कर कुछ क्षण और बिताने के लिए टैक्सी पकड़ ली तो कहीं छठ पर घर ना जाने की पीड़ा भी। हिजड़े समाज के प्रति सभी में जो घृणा का भाव है उसे इतनी सरलता से एक क़िस्से में उतारा है जो मुझे अचंभित कर गया। **— मनीषा वर्मा, *फ़ेसबुक***

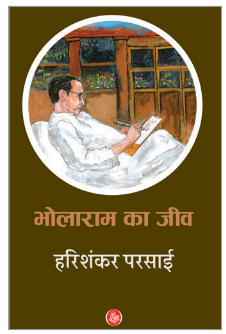

हरिशंकर परसाई ने अपनी तमाम रचनाओं में जीवन की विसंगतियों को निशाना बनाया था। इस किताब में उनकी पहले से छपी रचनाओं में से 33 को इस तरह पेश किया है कि उनके लेखन के विविध रंगों की झाँकी मिल सके। किताब को पढ़ते वक्त लगता है कि कई रचनाएँ मानो आजकल में ही लिखी गई हों। कबीर से प्रभावित परसाई की हर रचना आसपास के हालात से रूबरू कराती है। 'कन्धे श्रवण कुमार के' से लेकर 'प्रेमचन्द के फटे जूते' और 'पहला पापी' तक कई कालजयी रचनाओं का संकलन इस किताब में है। **— नवभारत टाइम्स, *नई दिल्ली***

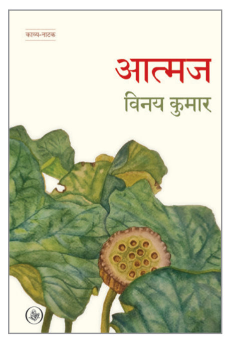

विनय कुमार ने 'कथा कहन' में परिचय होने पर यह काव्य-नाटक दिया था। 92 पृष्ठ की पतलीसी पुस्तक उठाई तो सोचा दो घंटे में पढ़ी जाएगी। पर यह तो आपको मन के ऐसे अजाने धरातलों पर ले जाती है और वह भी ऐसी समृद्ध समर्थ भाषा में, कि दो दिन भी कम पड़े इसे पढ़ने में। क्या कभी किसी ने पितृहीन होने के दुख पर लिखा है? बुद्ध के चले जाने पर राहुल, आम्रपाली के छोड़ देने पर उसका पुत्र विमल कैसे जूझे होंगे उस अनुपस्थित पिता की उपस्थिति से? और पिता क्या होता है, इसकी एक अद्भुत व्याख्या यहाँ मिली। यहाँ कवि फ्रायडियन काउच पर ख़ुद को लिटाकर इतिहास/ पुराण से इन आत्माओं का आह्वान करता है और एक ग़ज़ब दृश्यालेख रचता है। कहीं-कहीं 'अंधा युग' के अप्रतिम भावबोध और शिल्प की याद चली आए, तो आश्चर्य नहीं। **—अलका सरावगी, *फ़ेसबुक***

चर्चा में किताब

मेरे समकालीन लेखकों में प्रत्यक्षा का लेखन मुझे सबसे चुनौतीपूर्ण लगता रहा है। उनके उपन्यास 'बारिशगर' को पढ़ते हुए मैं जैसे पहाड़ की बारिश और गंध को महसूस करने लगा था। यही उनके लेखन की विशिष्टता रही है। सघन संवेदनात्मक भाषा और गहन दृश्यात्मकता। एक दशक से उनकी कहानियों को लेकर मैं या मेरे जैसे दूसरे पाठक इसी 'क्लीशे' में फँस जाने के आदी हो गए थे। लेकिन उनके नये कहानी-संग्रह 'अतर' की कहानियों को पढ़ते हुए बार-बार यह महसूस हुआ कि प्रत्यक्षा की कथाभूमि का विस्तार हुआ है, संवेदना का स्तर कुछ और हुआ है। वह पहले से कुछ अलग लेखिका हो गई हैं। उनकी कहानियों की विविधता आकर्षित करती है, कहानियों का रेंज प्रभावित करता है। **—प्रभात रंजन, *फ़ेसबुक***

प्रेम, अकुंठ समर्पण, सर्वांग साहचर्य, आत्मा और देह में एकमयता की एक खोज, इन सबसे मिलकर रचा गया यह उपन्यास `अर्कदीप्त'। जिसकी शुरुआत में बचपन की बातें यूँ लिखी गई हैं, जैसे अपने घर-पड़ोस की बात हो रही है। संयुक्त परिवार और उसकी खट्टी-मीठी ज़िन्दगी। एक जगह उपन्यास का नायक अर्कदीप्त गाय-भैंस से एकांत में कहता है मैं फ़र्स्ट आ गया। उसके बाद उनका रात भर रँभाने का चित्रण और फिर अनुगूँज में उभरता आर्तनाद सब बहुत मार्मिकतापूर्ण रचा है उषा जी ने। इस उपन्यास में वितान मद्धम गति पर है, पर रुक-रुक कर छोटी-छोटी घटनाओं का, बहुत भावुक कर देने वाला सुखद झटका, आपको आगे पढ़ने के लिए एनर्जी पैकेट देता रहेगा। **—यतीश कुमार, *फ़ेसबुक***

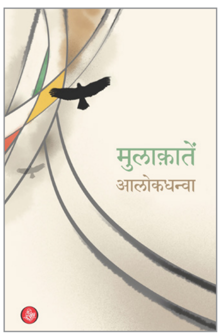

सरल-सहज भाषा में समय को तौलिये की तरह निचोड़कर रख देने वाले आलोकधन्वा का दूसरा काव्य-संग्रह 'मुलाकातें' एक अंतराल के बाद आया है। सन् 1998 में 'दुनिया रोज बनती है' शीर्षक उनके प्रथम संग्रह पर पाठकों, आलोचकों, संपादकों का ध्यान गया था। वामपंथी सांस्कृतिक आन्दोलनों में इनकी पोस्टर कविताएं सराही गईं। कुछ कविताएँ आज भी आलोकधन्वा की अलग पहचान बना पायी हैं। 'मुलाकातें' राजकमल से ही इनका दूसरा काव्य संग्रह 2023 में रेखांकित हुआ है। लगभग चालीस छोटी-बड़ी कविताएँ यहाँ प्रकृति, व्यक्ति, समाज या स्थान को रूपायित कर रही हैं। रात, बारिश, सवाल, श्रृंगार, मैं भी आऊँगा, या कल्पना की विडंबना, हम और सुर सरीखी आलोकधन्वा की छोटी, लघु लेकिन दीर्घ फलक को दिखाती कविताएँ प्रभावोत्पादक हैं। **— फूलचंद मानव, *दैनिक ट्रिब्यून***

सुनो कबीर... एक साँस में पढ़ी जाने वाली चरित्र गाथा है जिसका भूगोल ही इलाकाई नहीं जिसके चरित्र भी उस पूरे माहौल का रुचिकर आख्यान रचते हैं। `बलमा जी का स्टूडियो` जैसी चर्चित कहानी के बाद कवि-कथाकार सोनी पांडेय का गँवई गाँव के यथार्थपरक जीवन की अंतर्वस्तु में यह पहला औपन्यासिक प्रवेश मुबारक हो। **— ओम निश्चल, *फ़ेसबुक***

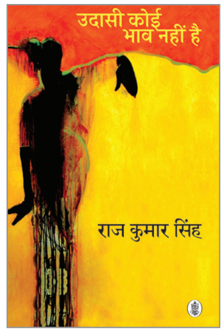

राधाकृष्ण प्रकाशन से प्रकाशित राज कुमार सिंह के कविता-संग्रह 'उदासी कोई भाव नहीं है' में पाठक जब कविता पढ़ना शुरू करता है तो वह खुद की खोज की यात्रा में निकल पड़ता है। जीवन के तमाम मोड़ों से गुजरती हुई कविताएँ खुद से शुरू होती हैं और ख़ुद पर जाकर ही अनंत की ओर मुड़ जाती हैं। निश्चित ही राज कुमार सिंह की कविताएँ नए अर्थ प्रस्तुत करती नजर आती हैं। ये कविताएँ पाठक को सोच की नई राह पर ले जाकर छोड़ती हैं। **— श्रीराम शर्मा, *न्यूज़ 18***

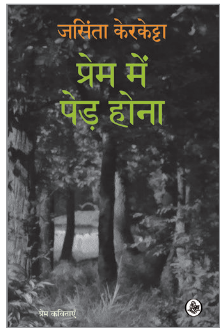

जसिंता केरकेट्टा आदिवासी कवयित्री हैं। वह लगातार आदिवासी हक़ के लिए लिखती, बोलती रही हैं। इस साल राजकमल प्रकाशन से उनका नया काव्य-संग्रह 'प्रेम में पेड़ होना' प्रकाशित हुआ। पिछले संग्रह 'ईश्वर और बाज़ार' में जहाँ उन्होंने ईश्वर की सत्ता को लगातार प्रश्नांकित किया, वहीं यह संग्रह प्रेम का एक अलग स्वर तलाशने की कोशिश करता है। वह ख़ुद इसे प्रेम कविताओं का संकलन मानती हैं। यह प्रेम निर्वात में नहीं हो रहा है। उसकी एक सामाजिक स्थिति है। प्रेम में पेड़ होने के आखिर क्या मायने हैं, इस पर मैं बहुत देर तक सोचता रहा। ये मुझे सुमन रॉय की किताब 'हाऊ आय बिकेम अ ट्री' की याद दिलाता रहा। जसिंता के लिए पेड़ प्रतिरोध का प्रतीक है। पेड़ जिसकी जड़ें ज़मीन में गहरे जाती हैं तो शिखर आसमान छूता है। पेड़ जिसमें धैर्य है, स्वार्थहीनता है। **— आयुष्मान, *फ़ेमिनिज़्म इन इंडिया***

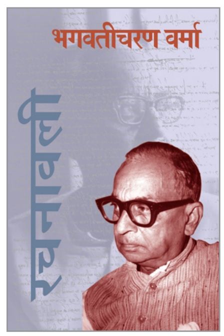

भगवतीचरण वर्मा को दुबारा पढ़ना जरूरी है। राजनीतिक इतिहास को समझने के लिए भी और भारतीय आधुनिक मन के बनने पर विचार करने के लिए। अद्भुत लेखक हैं। जीवन के इतने रंग उन्होंने देखे थे और इतनी सफ़ाई से एक से दूसरे में जाते रहे कि लगता है जीवन के प्रवाह और जीवन के आनंद के प्रति उनके मन में बड़ी श्रद्धा रही होगी। अक्सर हम उनका एकांगी मूल्यांकन करते हैं, उनमें अस्तित्ववादी विचारों को ही देख पाते हैं। निश्चित रूप से वह सब भी है लेकिन उनके पास और भी बहुत कुछ है। **— हितेंद्र पटेल, *फ़ेसबुक***

फिल्म निर्माता-निर्देशक पायल कपाड़िया की फीचर फिल्म 'ऑल वी इमेजिन एज लाइट' कान्स फिल्म महोत्सव में ग्रैंड प्रिक्स अवार्ड से हुई सम्मानित!

राजकमल से प्रकाशित जेरी पिंटो के उपन्यास 'माहिम में क़त्ल' पर आधारित वेब सीरीज़ 'MURDER IN MAHIM' जियो सिनेमा पर जारी हो गई है। जेरी पिंटो को हार्दिक बधाई! क्या होगी इस वेब सीरीज़ की स्टोरी? ड्रामा, संस्पेंस, मिस्ट्री, क्राइम और रोमांस से भरी इस सीरीज़ में वो कौन से मोड़ होंगे जो दर्शकों को हैरत में डाल सकते हैं? जानने के लिए पढ़ें 'माहिम में क़त्ल' उपन्यास

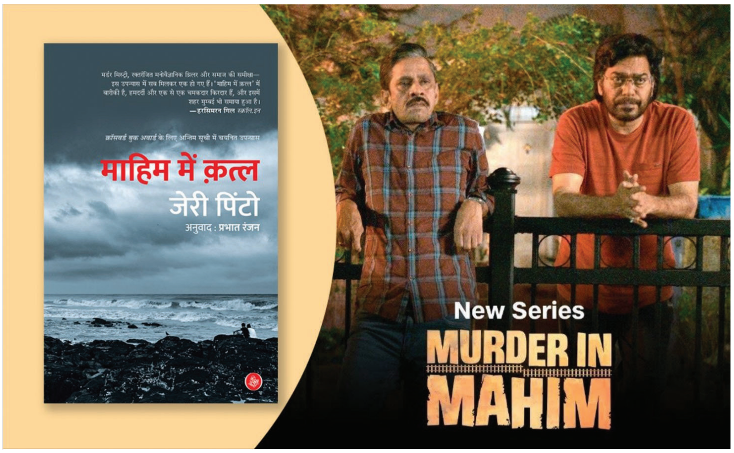

घुमन्तू स्वभाव के पत्रकार अभिषेक श्रीवास्तव की किताब 'कच्छ कथा : साझे अतीत की तलाश का सफ़रनामा' से प्रेरित डॉक्यूमेंट्री 'FROM SALT PANS TO YOUR PLATES' यूट्यूब पर उपलब्ध। अभिषेक श्रीवास्तव और 'न्यूज़ रील एशिया' टीम को हार्दिक बधाई!

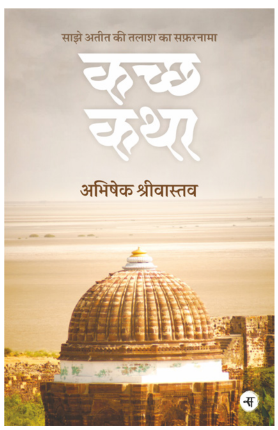

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जयंती पर राजकमल प्रकाशन समूह प्रस्तुत करता है हिन्दी में शीघ्र प्रकाशित दो अत्यंत महत्त्वपूर्ण पुस्तकें...

(1) विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के जीवन और साहित्य से जुड़ी बांग्ला के सुख्यात शब्दशिल्पी अमिताभ चौधरी की किताब 'रवीन्द्रनाथ की परलोक चर्चा' अनेक रोचक एवं विस्मयकर तथ्यों से भरपूर है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने जीवनकाल में अनेक प्रयोग किये थे और एक विशिष्ट 'माध्यम' के द्वारा परलोकगत आत्माओं से 'बातचीत' भी की थी। उन विस्तृत वार्तालापों के विवरण लिखित रूप में आज भी शान्तिनिकेतन के 'रवीन्द्र-सदन' में सुरक्षित हैं जिन्हें अमिताभ चौधरी ने अत्यन्त प्रामाणिक और कलात्मक ढंग से इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है।

(2) 'कबीर के सौ पद' रवीन्द्रनाथ ठाकुर की मूल कृति है जो हिन्दी में पहली बार प्रकाशित होने जा रही है। इस पुस्तक की ऐतिहासिक भूमिका यह है कि इसी किताब के माध्यम से पश्चिम के पाठकों का कबीर के पदों और उनकी वैचारिकता से परिचय हुआ था। पुस्तक का अनुवाद और सम्पादन रणजीत साहा जी ने किया है।

दोनों पुस्तकें रवीन्द्र-साहित्य के अध्येताओं के लिए विशेष पठनीय हैं।

'कैरोस' उपन्यास को मिला अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार, 2024

जेनी एर्पेनबेक द्वारा लिखित और माइकल हॉफमैन द्वारा अनूदित 'कैरोस' को अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार 2024 का विजेता नामित किया गया है। विजेता की घोषणा मैसन वैलेंटिनो द्वारा प्रायोजित और लंदन के टेट मॉडर्न में आयोजित एक समारोह में न्यायाधीशों के अध्यक्ष एलेनोर वाचटेल ने की।

VoW Book Awards 2024 लॉन्गलिस्ट में शामिल राजकमल प्रकाशन समूह की पुस्तकें

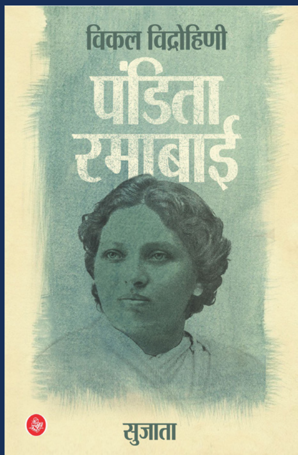

हिन्दी कथेतर

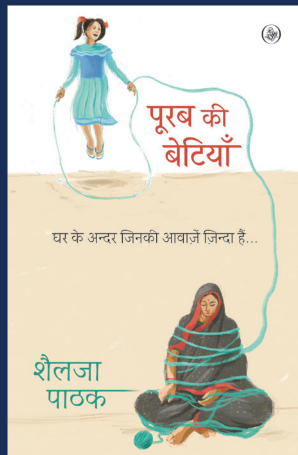

हिन्दी कथेतर

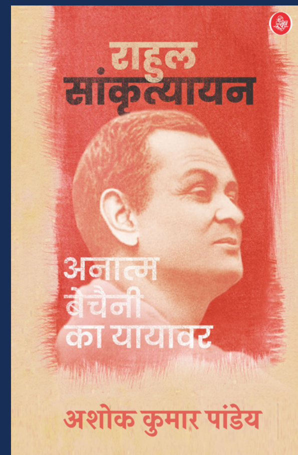

हिन्दी कथेतर

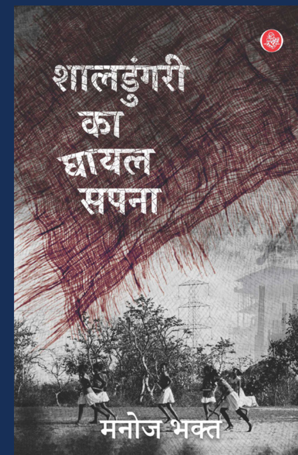

हिन्दी कथा साहित्य

हिन्दी कथा साहित्य

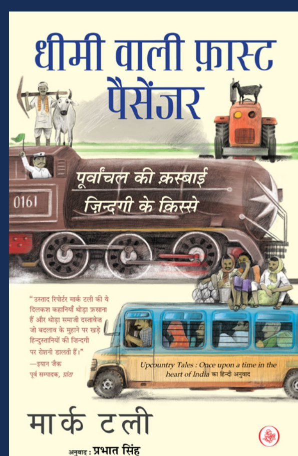

हिन्दी अनुवाद

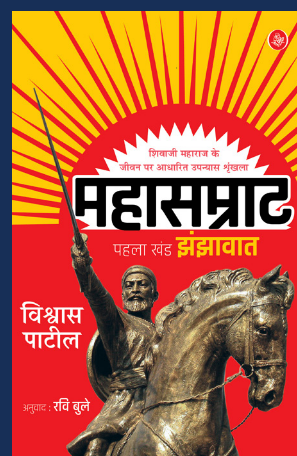

हिन्दी अनुवाद

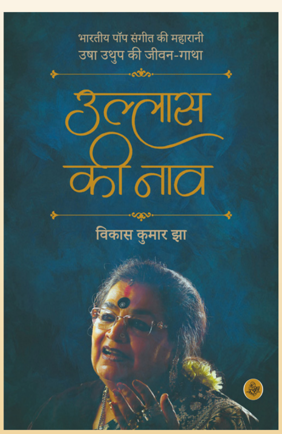

सुप्रसिद्ध पॉप गायिका उषा उथुप को पद्‌मभूषण सम्मान मिलने की हार्दिक बधाई!

राजकमल प्रकाशन से उषा उथुप की जीवनी 'उल्लास की नाव' शीर्षक से प्रकाशित है जिसके लेखक हैं पत्रकार विकास कुमार झा। इस किताब में उषा जी के जीवन के विभिन्न पक्षों को बहुत ही मार्मिक ढंग से लिखा गया है जिसे सुधी पाठक अवश्य पढ़ना चाहेंगे।

कमल नसीम की किताब
ग्रीस पुराण कथा कोश
अब गुजराती में उपलब्ध

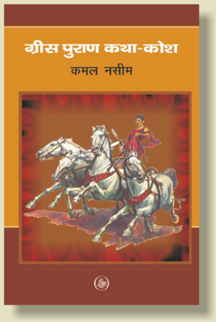

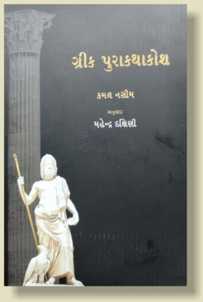

असग़र वजाहत का
उपन्यास **सात आसमान**
जर्मन भाषा में उपलब्ध

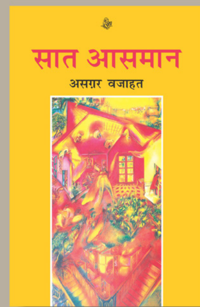

पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर
की आत्मकथा
जीवन जैसा जिया अब
मराठी में उपलब्ध

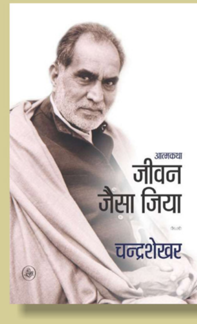

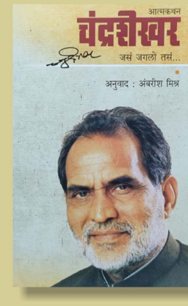

इस बीच जो हमसे बिछड़ गए...

मालती जोशी

एलिस मुनरो

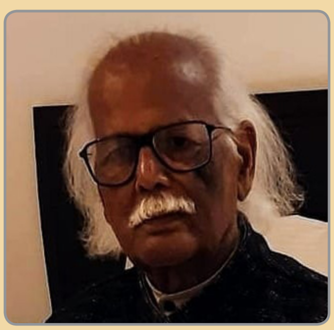

चौथीराम यादव

सुरजीत पातर

सुधीर कक्कड़

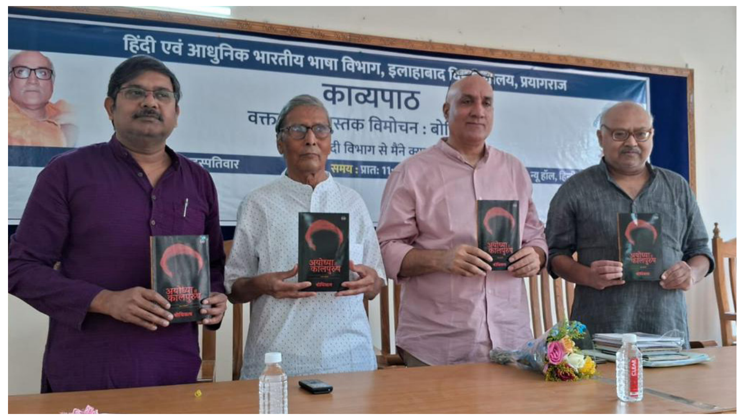

हिन्दी विभाग ने निर्भय सोच वाला मनुष्य बना दिया

बोधिसत्व के कविता-संग्रह का लोकार्पण

प्रयागराज, संवाददाता। ईद के दिन गुरुवार को इलाहाबाद विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग गुलज़ार रहा। मौक़ा था 'अयोध्या के कालपुरुष' के लोकार्पण और इसके रचनाकार कवि बोधिसत्व के काव्यपाठ का। काव्यपाठ से पहले बोधिसत्व ने शहर के पुराने दिनों को याद किया। 'मैंने हिन्दी विभाग से क्या पाया' विषय पर बोधिसत्व ने कहा कि इविवि के हिन्दी विभाग ने जो दिया, उसे कहना बहुत मुश्किल है। इविवि के हिन्दी विभाग ने उन्हें निर्भय सोच वाला मनुष्य बनाया। उन्होंने उपेंद्रनाथ अश्क, प्रो. जगदीश गुप्त, प्रो. मीरा श्रीवास्तव, प्रो. मालती सिंह, प्रो. मालती तिवारी, डॉ. दूधनाथ सिंह, प्रो. सत्यप्रकाश मिश्र, प्रो. निर्मला अग्रवाल आदि को याद किया।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक अशोक कुमार महेश्वरी ने बी.के. ऑफसेट, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 से मुद्रित कराकर
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित किया।
संपादक : अशोक कुमार महेश्वरी